लखनऊ

मंगलवार, 14 अप्रैल, 2026

वर्ष : 11 । अंक: 230

मूल्य : 1 रुपये

पृष्ठ : 8

UPHIN/2014/57034

हिंदी दैनिक

आर्यावर्त क्रांति

"मेहनत की आदत डाल लो, किस्मत खुद एक दिन आपको सलाम करने आएगी।"

TODAY WEATHER

DAY 28° Hi

NIGHT 17° Low

संक्षेप

लोकसभा का डिप्टी स्पीकर पद नौ साल से खाली, TMC सांसद बोले- संसद का मजाक बना रही सरकार

नई दिल्ली, एजेंसी। तृणमूल कांग्रेस (TMC) के राज्यसभा सांसद डेरेक ओ ब्रायन ने केंद्र सरकार पर तीखा हमला किया है। उन्होंने संसद की कार्यप्रणाली को लेकर गंभीर सवाल उठाए हैं। डेरेक ओ ब्रायन ने कहा कि सरकार संसद का मजाक बना रही है। उन्होंने कहा, लोकसभा के उपाध्यक्ष का पद साल 2019 से खाली पड़ा है। सरकार ने इतने वर्षों में इस पद को भरने की कोई कोशिश नहीं की। लेकिन राज्यसभा के उपसभापति का पद, जो सिर्फ 10 दिनों से खाली हुआ है, उसे भरने के लिए भाजपा इतनी जल्दबाजी क्यों दिखा रही है। सांसद ने चुनाव की तारीख पर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा भाजपा यह चुनाव 17 अप्रैल को क्यों करवाना चाहती है। डेरेक ओ ब्रायन के अनुसार, इस समय कई सांसद अपने-अपने राज्यों में विधानसभा चुनावों में व्यस्त हैं। उनका कहना है कि जब सांसद चुनाव प्रचार में लगे हैं, तब सदन में इस तरह का चुनाव कराना गलत है। उन्होंने इस प्रक्रिया को शर्मनाक बताया है।

तेजस्वी यादव का जेडीयू पर बड़ा हमला, नीतीश की पार्टी अब भाजपा की कठपुतली बन गई है

नई दिल्ली। तेजस्वी यादव ने शनिवार को आरोप लगाया कि नीतीश कुमार अपनी ही पार्टी के दबाव में बिहार के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे रहे हैं। उन्होंने दावा किया कि सहयोगी भाजपा ने कुछ सहयोगियों को डराया-धमकाया या लालच दिया है। यह टिप्पणी कुमार के राज्यसभा सांसद के रूप में शपथ लेने के एक दिन बाद आई, जब उनका सामान मुख्यमंत्री आवास से पास के एक सरकारी बंगले में स्थानांतरित किया जा रहा था। आरजेडी के एक कार्यक्रम में पत्रकारों से बात करते हुए यादव ने कहा कि मैं शर्त लगाता हूं कि नीतीश कुमार को हटाने का सौदा जेडीयू के कुछ बड़े नेताओं ने बहुत पहले ही कर लिया था। इसे सार्वजनिक नहीं किया गया क्योंकि विधानसभा चुनावों के दौरान इसका उल्टा असर हो सकता था। तेजस्वी यादव ने कहा कि जेडीयू अब जेडीयू नहीं रही; यह अब भाजपा की एक कठपुतली बन गई है।

भाजपा के एजेंट जेडीयू में हैं; इन्हीं लोगों ने जेडीयू को बर्बाद किया है।।। नीतीश कुमार को जिस तरह विदाई दी गई है, वह बेहद दुखद है। जो व्यक्ति 20 साल तक मुख्यमंत्री रहा, अब आप उसे राज्यसभा भेजने का फैसला कर रहे हैं। उसे जबरदस्ती भेजा गया है। यादव ने यह भी दावा किया कि इन घटनाक्रमों के पीछे कुछ जेडीयू नेता या तो भाजपा से प्रभावित थे या ईडी और सीबीआई जैसी केंद्रीय एजेंसियों के दबाव में थे। हालांकि किसी भी जेडीयू नेता ने आधिकारिक तौर पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, लेकिन पार्टी सूत्रों ने स्वीकार किया कि संजय झा और कुमार के अन्य करीबी सहयोगियों की भूमिका को लेकर कार्यकर्ताओं में आशंकाएं थीं। उन्होंने बताया कि दिल्ली स्थित पार्टी कार्यालय में कुमार के दौरे के दौरान, कई कार्यकर्ताओं ने जोर देकर कहा कि भले ही वे पद छोड़ दें, मुख्यमंत्री का पद भाजपा को नहीं दिया जाना चाहिए।

2029 तक नारी वंदन कानून लागू करने पर विपक्ष ने खास तौर से दिया जोर: पीएम मोदी

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2023 में पेश किए गए 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' को 21वीं सदी का एक महत्वपूर्ण कदम बताया है। उन्होंने कहा कि इस अधिनियम को सभी दलों ने सर्वसम्मति से पारित किया, जो महिला सशक्तिकरण के प्रति देश की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह कानून दशकों से महसूस की जा रही महिलाओं के लिए लोकतांत्रिक ढांचों में आरक्षण की आवश्यकता को पूरा करता है।

पीएम मोदी ने कहा कि सभी दलों ने इसे सर्वसम्मति से पारित किया और विपक्ष ने खास तौर पर 2029 तक महिला आरक्षण कानून लागू करने की जरूरत पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक ढांचे में महिलाओं को आरक्षण देने की आवश्यकता दशकों से महसूस की जाती रही है। उन्होंने कहा कि भारत की 'नारी शक्ति' ने देश के विकास में बड़ा योगदान दिया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने महिला सम्मेलनों को संबोधित करते हुए कहा कि 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' का पारित होना भारत के लिए एक ऐसे समतावादी राष्ट्र के निर्माण का संकल्प है, जहां सामाजिक न्याय केवल एक नारा नहीं, बल्कि कार्य संस्कृति का एक स्वाभाविक हिस्सा है। उन्होंने जोर दिया कि यह अधिनियम भारत की 'नारी शक्ति' के अमूल्य योगदानों को स्वीकार करता है।

महिलाओं का आशीर्वाद लेने आया हूं : पीएम मोदी

नारी शक्ति वंदन सम्मेलन में पीएम मोदी ने कहा कि मैं यहां किसी को उपदेश देने या जागरूक करने नहीं, बल्कि देश की महिलाओं का आशीर्वाद लेने आया हूं। नारी शक्ति वंदन अधिनियम का लागू होना 21वीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण कदमों में से एक है। हमारे देश में पंचायती राज संस्थाएं महिलाओं के नेतृत्व का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

महिलाओं की भागीदारी बढ़ने से जवाबदेही होती है सुनिश्चित : पीएम

प्रधानमंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि इस संशोधन विधेयक को संवाद, सहयोग और भागीदारी के माध्यम से पारित कराना सरकार का प्रयास और प्राथमिकता रही है। उन्होंने कहा कि महिलाओं की निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में बढ़ी हुई भागीदारी से प्रणालियों के भीतर अधिक संवेदनशीलता और जवाबदेही सुनिश्चित होती है।

32 करोड़ महिलाओं के बैंक खाते खुले

हमारे देश में महिला नेतृत्व का एक बेहतरीन उदाहरण पंचायती राज संस्थाएं भी हैं। आज भारत में 14 लाख से अधिक महिलाएं लोकल गवर्नमेंट बॉडीज में सफलतापूर्वक काम कर रही हैं। लगभग 21 राज्यों में तो पंचायतों में उनकी भागीदारी करीब-करीब 50% तक पहुंच चुकी है। 2014 में हमारे देश में करोड़ों महिलाएं ऐसी थी, जिन्होंने कभी बैंक का दरवाजा भी नहीं देखा था। महिलाएं बैंकिंग सेक्टर से जुड़ी ही नहीं थी, तो उन्हें बैंकिंग का लाभ कैसे मिलता। हमने जनधन योजना शुरू की, तो देश की 32 करोड़ से ज्यादा महिलाओं के बैंक खाते खुले।

सभी दलों ने एक सुर में जताई थी सहमति

पीएम मोदी ने कहा कि 2023 में जब नारी शक्ति वंदन अधिनियम आया था, तब भी सभी दलों ने सर्वसम्मति से इसे पास कराया था। तब एक सुर में ये बात भी उठी थी कि इसे हर हाल में 2029 तक लागू हो जाना चाहिए। खासकर, हमारे विपक्ष के सभी साथियों ने मुखर होकर इस बात पर जोर डाला था कि 2029 में ये लागू हो जाना चाहिए। पीएम मोदी ने कहा कि लाखों महिलाओं की राजनीति और सामाजिक जीवन में ये सक्रियता, दुनिया के बड़े-बड़े नेताओं और राजनीति के विशेषज्ञों के लिए भी बहुत ही हैरान करने वाली बात होती है। पीएम मोदी ने कहा इससे भारत का गौरव बहुत बढ़ता है। अनेक अध्ययनों में ये सामने आया है कि जब निर्णय प्रक्रियाओं में महिलाओं की सहभागिता बढ़ी, तो इससे व्यवस्थाओं में भी संवेदनशीलता आई है।

बीरभूम में गरजे अमित शाह, कहा- पांच मई को बनने वाली है भाजपा सरकार, बंगाल की जनता ने लिया निर्णय

कोलकाता, एजेंसी। पश्चिम बंगाल के बीरभूम में गृहमंत्री अमित शाह ने एक बड़ी चुनावी रैली को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने टीएमसी पर कड़ा प्रहार किया। शाह ने कहा बंगाल में पांच मई को भाजपा की सरकार बनने वाली है। मैं पूरे बंगाल में घूमता हुआ बीरभूम आया हूं। दीदी को टाटा-बाय-बाय कहने का निर्णय बंगाल की जनता ने ले लिया है। शाह ने कहा कि इस बार बीरभूम को एक रिकॉर्ड बनाना है। उन्होंने जनता से अपील की कि वे सभी 11 सीटें भाजपा को दें और राज्य में भाजपा सरकार बनाएं।

ममता बनर्जी पर निशाना साधते हुए शाह ने कहा, दीदी, आपके गुंडों के बम धमाकों से बंगाल की जनता अब नहीं डरेगी। उन्होंने जोर देकर कहा कि बंगाल की जनता बम का जवाब बैलेट से देगी और भय का जवाब भरोसे से देगी। उन्होंने लोगों से कहा कि आप बैलेट मशीन पर कमल का निशान दबाइए, ममता के सारे गुंडों को ढूंढने का काम भाजपा की सरकार करेगी। गृहमंत्री ने कटमनी और सिंडिकेट का मुद्दा भी प्रमुखता से उठाया। उन्होंने कहा कि जनता इससे बहुत परेशान है। अगर किसी गरीब को घर बनाने के लिए ईंट या सीमेंट लाना है, तो ममता के सिंडिकेट वाले पैसे मांगते हैं। शाह ने वादा किया कि आप ममता को यहां से निकाल दो, कटमनी और सिंडिकेट वालों को उल्टा लटकाकर सीधा करने का काम भाजपा की सरकार करेगी।

शाह ने टीएमसी को दी चेतावनी

अमित शाह ने कहा कि बंगाल में चार मई के बाद डबल इंजन सरकार बनने वाली है। इसके साथ ही बंगाल के अंदर विकास का नया दौर शुरू होने वाला है। उन्होंने टीएमसी पर हमला करते हुए कहा कि इस पार्टी ने मयूरेश्वर को बम और बारूद की खदान बना दिया है। शाह ने आरोप लगाया कि 2013 से लेकर 2021 तक भाजपा कार्यकर्ताओं को बहुत परेशान किया गया है। उन्होंने टीएमसी के गुंडों को सख्त चेतावनी दी। शाह ने कहा, मैं आज टीएमसी के गुंडों को कहकर जाता हूं कि 23 अप्रैल को अपने घर में बंद रहना, वरना पांच मई को चुन-चुनकर जेल की सलाखों के पीछे डालने का काम हम करेंगे। उन्होंने जनता को भरोसा दिलाया कि 23 अप्रैल को ममता दीदी का कोई भी गुंडा उनका बाल भी बांका नहीं कर पाएगा।

गृहमंत्री ने जनता से किया वादा

शाह ने सुरक्षा व्यवस्था पर जानकारी देते हुए कहा कि चुनाव आयोग ने यहां 800 से ज्यादा कंपनियां भेजी हैं। शांतिपूर्ण मतदान के लिए पूरे इंतजाम किए गए हैं, इसलिए किसी भी नागरिक को डरने की जरूरत नहीं है। अमित शाह ने कहा कि यह चुनाव घुसपैठियों को बाहर निकालने का चुनाव है। उन्होंने आरोप लगाया कि ममता दीदी और भतीजा उनको नहीं निकाल सकते। वे तो बीएसएफ को बाड़ लगाने के लिए जमीन भी नहीं देते हैं। शाह ने वादा किया कि भाजपा सरकार बनते ही 45 दिन के अंदर बंगाल की पूरी सीमा पर बाड़ लगाने के लिए जमीन दे दी जाएगी।

सीएम ममता ने पीएम को घेरा, कहा- युवाओं को प्रभावित करने के लिए 'मन की बात' का प्रसारण

कोलकाता। आगामी पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव से पहले सियासी दलों के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर जारी है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा। ममता बनर्जी ने बीरभूम के सूरी में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री का 'मन की बात' कार्यक्रम युवाओं के मन को प्रभावित करने के लिए प्रसारित किया जा रहा है। रैली में सीएम ममता बनर्जी ने तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की जीत का दावा भी किया। उन्होंने कहा कि भाजपा दिल्ली की ताकतों का इस्तेमाल करके बंगाल चुनाव नहीं जीत पाएगी, टीएमसी को 226 से अधिक सीटें मिलेंगी। सीएम बनर्जी ने कहा कि 19 राज्य और केंद्र सरकार मेरे खिलाफ एकजुट हो गए हैं, मैं अकेले ही आम लोगों के लिए लड़ रही हूं।

संसद सत्र से पहले महिला आरक्षण पर सियासी घमासान, खरगे ने इसे बताया राजनीतिक स्टंट

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने सोमवार को कहा कि उनकी पार्टी लोकसभा में महिला आरक्षण का समर्थन करती है, लेकिन उन्होंने सरकार द्वारा इसे राजनीतिक कारणों से आगे बढ़ाने की आलोचना की। नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023 में संशोधनों पर चर्चा के लिए 16 अप्रैल से शुरू होने वाले तीन दिवसीय विशेष संसदीय सत्र से पहले, खरगे ने जोर दिया कि 15 अप्रैल को होने वाली सर्वदलीय बैठक में आगे की कार्रवाई तय की जाएगी।

बेंगलुरु में पत्रकारों से बात करते हुए खरगे ने कहा कि हम नारी शक्ति विधेयक के खिलाफ नहीं हैं। मुझे (किरेन रिजिजू से) एक पत्र मिला है, लेकिन वे इसे राजनीतिक कारणों से कर रहे हैं। वे कह रहे हैं कि यह विधेयक उन्होंने राजनीतिक कारणों से पेश किया है। हमने 15 तारीख को सर्वदलीय बैठक बुलाई है। हम सर्वदलीय बैठक में इस पर चर्चा करेंगे और आगे का फैसला लेंगे। हमने अपने कार्यकाल में यह प्रस्ताव रखा था; हम इसके खिलाफ नहीं हैं। नारी शक्ति वंदन अधिनियम महिलाओं के आरक्षण को नई जनगणना और परिसीमन से जोड़ता है। जनगणना में देरी के कारण, केंद्र सरकार परिसीमन के लिए 2011 की जनगणना के आंकड़ों का उपयोग करने और महिला विधायकों के लिए एक तिहाई आरक्षण लागू करने का इरादा रखती है। नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023 में संशोधन विधेयक और महिला विधायकों के लिए एक तिहाई आरक्षण लागू करने के उद्देश्य से लाए गए परिसीमन विधेयक पर विचार करने के लिए संसद का 16 अप्रैल से तीन दिनों का विशेष सत्र आयोजित किया जाएगा। इन संशोधनों के बाद लोकसभा की सीटें 543 से बढ़कर 816 हो सकती हैं। दोनों विधेयकों को महिला आरक्षण स्थापित करने के लिए संवैधानिक संशोधन के रूप में पारित करना आवश्यक है। इन विधेयकों में ओबीसी आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं है, और अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति आरक्षण में कोई बदलाव नहीं होगा। इससे पहले सोमवार को, नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023 को लागू करने के लिए प्रस्तावित संशोधन के समर्थन में नई दिल्ली के विज्ञान भवन में राष्ट्रीय स्तर का 'नारी शक्ति वंदन सम्मेलन' आयोजित किया गया था।

हिंसा पर सीएम योगी का बड़ा बयान, बोले- प्रदेश में अशांति फैलाने की हो रही साजिश

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

नोएडा। एनसीआर में श्रमिकों के बढ़ते असंतोष की लहर नोएडा में हिंसा में तब्दील हो गई, जिसके बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शांति बनाए रखने की अपील की और श्रमिकों को आश्वासन दिया कि सरकार उनके साथ खड़ी है। मुजफ्फरनगर में एक रैली को संबोधित करते हुए योगी ने बढ़ते तनाव के बीच श्रमिकों से सीधे अपील करते हुए दृढ़ रुख अपनाया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में बनी दोहरी इंजन सरकार सुरक्षा, सुशासन और सेवा का एक आदर्श मॉडल बना रही है। उन्होंने आगे कहा कि कुछ लोग अशांति फैलाने और राज्य को शांति और समृद्धि की ओर बढ़ने से रोकने की साजिश रच रहे हैं।

योगी ने श्रमिकों से भी अपील करते हुए कहा कि मैं सभी कर्मचारियों और मजदूरों से अपील करता हूं, डबल इंजन वाली सरकार हमेशा आपके साथ खड़ी है, साथ ही उन्होंने याद दिलाया कि कोविड काल के दौरान श्रमिकों को सरकार द्वारा व्यवस्थित वाहनों का उपयोग करके घर पहुंचाया गया था। दूसरी ओर उत्तर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने नोएडा में श्रमिकों के विरोध प्रदर्शन से निपटने के तरीके को लेकर राज्य सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि मदरसन ग्रुप की फैक्ट्री के बाहर के दृश्य चिंताजनक थे। एक्स पर एक पोस्ट में राय ने कहा कि बढ़ती महंगाई और कथित वेतन शोषण श्रमिकों को सड़कों पर उतरने के लिए मजबूर कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि विज्ञापन खाली पेट नहीं भर सकते और आंसू गैस के गोले भूख मिटा नहीं सकते। उन्होंने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से बल प्रयोग करने के बजाय श्रमिकों की मांगों को पूरा करने का आग्रह किया। वेतन वृद्धि की मांग को लेकर फैक्टरी कर्मियों द्वारा किया जा रहे प्रदर्शन के दौरान सोमवार को जमकर हिंसा हुई औरनोएडा के फेज-2 और सेक्टर-60 इलाकों में वाहनों में आग लगा दी गई, संपत्ति को नुकसान पहुंचाया गया और पथराव की घटनाएं सामने आईं। पुलिस ने यह जानकारी दी। प्रदर्शन के कारण यातायात ठप हो गया, जिससे सुबह के व्यस्त समय में दिल्ली जाने वाली विभिन्न सड़कों पर हजारों यात्री फंस गए। दिल्ली-नोएडा सीमा पर कई किलोमीटर तक वाहनों की लंबी कतारें देखी गईं।

वोटिंग से पहले बायोमेट्रिक की मांग पर पीआईएल, सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग और केंद्र सरकार को भेजा नोटिस

नई दिल्ली, एजेंसी। मतदान से पहले मतदाताओं की बायोमेट्रिक और चेहरे की पहचान की मांग को लेकर सुप्रीम कोर्ट में दायर की गई जनहित याचिका पर नोटिस जारी की गई है। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में केंद्र सरकार और चुनाव आयोग व राज्यों को भेजा नोटिस भेजा है। सुप्रीम कोर्ट ने नोटिस का 4 हफ्ते में जवाब मांगा है। आगामी विधानसभा चुनावों में चुनावी में धांधली रोकने को लेकर ये मांग की गई है। सुनवाई के दौरान जस्टिस सूर्यकांत ने कहा कि इसके लिए नियमों में व्यापक बदलाव और भारी वित्तीय बोझ की आवश्यकता होगी। उन्होंने कहा कि बेशक चुनाव आयोग के पास शक्तियां हैं।

याचिककर्ता अश्विनी उपाध्याय ने कहा कि चुनाव आयोग के पास पूर्ण शक्तियां हैं। लेकिन राज्यों को भी सहयोग करना होगा और नोटिस जारी करना आवश्यक है। CJI ने कहा कि चुनाव आयोग को हमें जवाब देना होगा और यदि राज्य सहयोग नहीं करते हैं या वित्त मंत्रालय बजट पारित नहीं करता है तो फिर हमसे संपर्क किया जा सकता है।

लालच देने वाली प्रथाओं पर रोक की जरूरत

सुनवाई के दौरान, उपाध्याय ने कहा कि प्रस्तावित व्यवस्था चुनावी धोखाधड़ी को रोकने के लिए एक निवारक तंत्र के रूप में काम करेगी। उन्होंने माना कि आगामी विधानसभा चुनावों में ऐसे उपायों को लागू करना शायद संभव न हो, लेकिन उन्होंने तर्क दिया कि भविष्य के चुनावों में इस व्यवस्था को लागू किया जा सकता है, ताकि प्रॉक्सी वोटिंग और मतदाताओं को लालच देने जैसी प्रथाओं पर रोक लगाई जा सके। मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि आगामी चुनावों के लिए इन याचिकाओं पर विचार नहीं किया जा सकता है। लेकिन क्या अगले संसदीय चुनावों या राज्य चुनावों के लिए इस तरह का उपाय अपनाना उचित है, इसकी जांच करने की आवश्यकता है। नोटिस जारी करें। याचिका में कहा गया है कि कार्रवाई का कारण 20 मार्च, 2026 को तब उत्पन्न हुआ, जब याचिकाकर्ता को पता चला कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा उठाए गए विभिन्न उपायों के बावजूद, रिश्वतखोरी, अनुचित प्रभाव, प्रतिरूपण, दोहरी वोटिंग और घोस्ट वोटिंग की घटनाएं लगातार जारी रहीं, जिससे चुनावी प्रक्रिया में जनता का विश्वास कमज़ोर हुआ।

हाई कोर्ट में अपने केस के खुद वकील बने केजरीवाल, जज के सामने कहा- अप्रूवर के स्टेटमेंट पर सीबीआई का पूरा केस

नई दिल्ली, एजेंसी। एक्साइज पॉलिसी केस में दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल की याचिका पर सोमवार को दिल्ली हाईकोर्ट में सुनवाई हुई है। इस दौरान केजरीवाल खुद अपना पक्ष रख रहे थे। सुनवाई के दौरान केजरीवाल ने कहा कि हमें भ्रष्टाचारी साबित करने की कोशिश की गई। ट्रायल कोर्ट ने हमें बरी कर दिया। सीबीआई का पूरा केस अप्रूवर स्टेटमेंट पर आधारित है। ईडी-सीबीआई ने इतनी रेड की लेकिन कोई रिकवरी नहीं हुई। कथित शराब घोटाले में केजरीवाल ने दिल्ली हाई कोर्ट में अर्जी दाखिल कर जज बदलने की मांग की है। उन्होंने जस्टिस स्वर्ण कांता शर्मा के समक्ष 'रिक्यूजल' (सुनवाई से हटने) की याचिका दी थी। कोर्ट में अपना पक्ष रख रहे केजरीवाल ने कहा कि यह कहा गया कि उन्होंने मनी लॉन्ड्रिंग की है। एक पैरा में लगभग यह कहा गया कि ये सब लोग भ्रष्ट हैं। ऐसा लगा हमें केवल भ्रष्ट नहीं, महाभ्रष्ट घोषित कर दिया। मनीष सिसोदिया के मामले में सिर्फ तीन सुनवाई हुई और ऐसा मान लिया गया कि मनीष भ्रष्ट हैं। सुप्रीम कोर्ट ने उस फैसले को रद्द कर दिया। इस केस में बस तीन हियरिंग हुई थी। कोई चार्जशीट नहीं थी। कोई प्रार्थना नहीं थी।

ग्रेटर नोएडा में रफ्तार का कहर! दो स्कूल बसों की आमने-सामने टक्कर, 12 से ज्यादा बच्चे घायल

आर्यावर्त संवाददाता

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा के दादरी थाना क्षेत्र अंतर्गत रूपवास गांव के पास आज सुबह एक बड़ा और भयावह सड़क हादसा हो गया। तेज रफ्तार और अनियंत्रित बस ने एक स्कूल बस को जोरदार टक्कर मार दी, जिससे मौके पर अफरा-तफरी मच गई। इस हादसे में करीब एक दर्जन से अधिक बच्चे घायल हो गए हैं, जबकि स्कूल बस का चालक गंभीर रूप से घायल हुआ है, जिसे नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां आईसीयू में उसका इलाज चल रहा है। बताया जा रहा है कि बस चालक के सिर में गंभीर चोट आई है।

जानकारी के अनुसार यह हादसा सुबह करीब 7 बजे आमका रोड, रूपवास गांव के पास हुआ। बताया जा रहा है कि एक बस, जो रामाज्ञा स्कूल की बताई जा रही है, तेज रफ्तार में थी और चालक नियंत्रण खो बैठा। इसी दौरान सामने से आ रही जीसस मैरी स्कूल की बस से उसकी जोरदार टक्कर हो गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों बसों के आगे के हिस्से बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। घटना के समय जीसस मैरी स्कूल की बस में करीब 25 बच्चे सवार थे, जबकि दूसरी बस खाली बताई जा रही है।

हादसे के बाद मौके पर बच्चों की चीख-पुकार सुनकर आसपास के लोग दौड़ पड़े। स्थानीय लोगों ने तुरंत राहत-बचाव कार्य शुरू किया और पुलिस को इसकी सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से सभी घायलों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया और बस चालक को कड़ी मशक्कत के बाद बाहर निकाला।

बस चालक की हालत गंभीर

हादसे के तुरंत बाद सभी घायल बच्चों को पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया। डॉक्टरों की टीम ने बताया कि ज्यादातर बच्चों को हल्की चोटें आई हैं, लेकिन कुछ बच्चों को ज्यादा चोट लगने के कारण निगरानी में रखा गया है। उनके सिर में गंभीर चोटें आई हैं, जिनका इलाज किया जा रहा है। वहीं इस हादसे में स्कूल बस का चालक गंभीर रूप से घायल हुआ है। उसके सिर में गहरी चोट आई है और उसे आईसीयू में भर्ती कराया गया है। डॉक्टरों के अनुसार चालक की हालत अभी नाजुक बनी हुई है। जैसे ही हादसे की सूचना बच्चों के परिजनों को मिली, वे घबराकर अस्पताल पहुंचने लगे। अस्पताल परिसर में बच्चों के अभिभावकों की भीड़ लग गई और सभी अपने बच्चों की हालत जानने के लिए परेशान नजर आए। हादसे में घायल बच्चों में शौर्य नगर, अभिषेक शुक्ला, मेघना शुक्ला, प्रज्ञा शुक्ला, जानवी शुक्ला, पीहू मित्तल और अनआयशा सहित कई अन्य बच्चे शामिल हैं।

लापरवाही पर उठे सवाल

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंच गई और हालात को संभाला। पुलिस ने दोनों बसों को कब्जे में लेकर मामले की जांच शुरू कर दी है और हादसे के कारणों का पता लगाया जा रहा है। वहीं इस पूरे मामले में एडिशनल डीसीपी ग्रेटर नोएडा सुधीर कुमार ने बताया कि आज सुबह करीब 7:00 बजे के आसपास डायल 112 पर पुलिस को सूचना मिली कि दो स्कूल बसों की आपस में भिड़ंत हो गई है। सूचना पाकर तुरंत पुलिस मौके पर पहुंची और सभी बच्चों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया। वहीं बस चालक को कड़ी मशक्कत के बाद बाहर निकाला गया और उसे भी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जबकि दूसरी बस का चालक मौके से फरार है, जिसकी तलाश जारी है। इस हादसे ने एक बार फिर स्कूल बच्चों की सुरक्षा व्यवस्था और ड्राइवर की लापरवाही पर सवाल खड़े कर दिए हैं। अभिभावकों का कहना है कि बच्चों की सुरक्षा के साथ किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जानी चाहिए।

शक्ति वंदन भाजपा का ऐतिहासिक कदम : सीमा द्विवेदी

आर्यावर्त संवाददाता

जौनपुर। भारतीय जनता पार्टी द्वारा शक्ति वंदन अधिनियम के कार्यान्वयन और आगामी योजनाओं को लेकर प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया। जिसको राज्य सभा सांसद सीमा द्विवेदी ने संबोधित किया। राज्य सभा सांसद ने बताया कि संसद के आगामी विशेष सत्र में अधिनियम से जुड़ी तकनीकी बाधाओं को दूर किया जाएगा और नए प्रस्ताव के तहत लोकसभा सीटों की संख्या 816 करने की योजना है, जिससे महिलाओं के लिए 273 सीटें आरक्षित होंगी। बताया कि अब 2027 की जनगणना की प्रतीक्षा किए बिना, 2011 की जनगणना के आधार पर परिसीमन की प्रक्रिया शुरू करने पर विचार किया जा रहा है, ताकि 2029 में महिलाएं अपना हक पा सकें जन-जागरण अभियान के तहत आगामी 15 से 17 अप्रैल तक पूरे जिले में श्नारी शक्ति पदयात्राश और स्कूटी रैलियों का आयोजन किया जाएगा।उन्होंने बताया कि 14 अप्रैल बूथ स्तर पर महिला संवाद कार्यक्रम।15-16 अप्रैलरू श्शक्ति वंदन पदयात्रा का आयोजन। टी डी कालेज की प्रिंसिपल अर्चना सिंह ने कहा कि समाज के सभी वर्गों, विशेषकर मातृशक्ति से अपील करती है कि वे इस अभियान से जुड़कर विकसित भारत के संकल्प को सिद्ध करें उन्होंने विपक्षी दलों से भी अपील की कि दलगत राजनीति से ऊपर उठकर इस ऐतिहासिक कदम का समर्थन करे उन्होंने यह भी बताया कि यह अधिनियम पंचायतों से लेकर संसद तक महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता और उनकी भागीदारी को नई ऊंचाई प्रदान करेगा।

राजनीतिक सशक्तिकरण ही कायस्थ समाज की प्रगति : अजय शंकर

आर्यावर्त संवाददाता

जौनपुर। स्थानीय मुक्तेश्वर प्रसाद महाविद्यालय के सभागार में आयोजित कायस्थ चेतना संगोष्ठी में कायस्थ समाज की एकजुटता और राजनीतिक भागीदारी पर जोर दिया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अजय शंकर श्रीवास्तव ने कहा कि कायस्थ समाज का इतिहास देश की आजादी से लेकर स्वतंत्र भारत तक गौरवशाली रहा है। चाहे प्रशासनिक सेवाएं हों या राजनीति, हर क्षेत्र में कायस्थों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि वर्तमान समय में समाज राजनीतिक रूप से हाशिए पर पहुंचता जा रहा है, जिसका मुख्य कारण टिकट वितरण में उपेक्षा है। उन्होंने आह्वान किया कि समाज को अब स्वयं आगे आकर राजनीतिक रूप से सशक्त बनना होगा, तभी अन्य क्षेत्रों में भी मजबूती आएगी।राष्ट्रीय

महासचिव जितेंद्र कुमार सिंन्हा ने कहा कि उन्हें स्वामी विवेकानंद, सुभाष चंद्र बोस, जयप्रकाश नारायण और राजेंद्र प्रसाद जैसे महापुरुषों से प्रेरणा लेकर उनके आदर्शों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए।गोरखपुर मंडल अध्यक्ष अमरेश श्रीवास्तव ने ओजस्वी भाषण में कहा कि वर्तमान समय में समाज को राजनीतिक रूप से सशक्त होना अत्यंत आवश्यक है। विशिष्ट अतिथि कर्मचारी नेता राकेश श्रीवास्तव ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि चुनाव में कायस्थ समाज ने उन्हें भरपूर समर्थन दिया। अध्यक्षता आनंद मोहन श्रीवास्तव ने की, संचालन वरिष्ठ पत्रकार संजय अस्थाना द्वारा किया गया। मनोज श्रीवास्तव, श्याम रतन श्रीवास्तव, धीरज श्रीवास्तव, अनिल श्रीवास्तव बबलू, अखिलेश श्रीवास्तव, विनय श्रीवास्तव, संदीप अस्थाना, बबलू अस्थाना सहित बड़ी संख्या में कायस्थ समाज के लोग उपस्थित रहे।

मासूम चेहरा, खौफनाक जुर्म... मुरादाबाद की लेडी विलेन 3 साल बाद अरेस्ट, पति को किया था सुसाइड के लिए मजबूर

आर्यावर्त संवाददाता

मुरादाबाद। कानून के हाथ लंबे होते हैं, यह कहावत एक बार फिर सच साबित हुई है। मुरादाबाद पुलिस ने 3 साल से आंख-मिचौली खेल रही उस गुनाहगार पत्नी को गिरफ्तार कर लिया है, जिसने अपने ही सुहाग को जीते-जी नर्क दिखाया और अंततः उसे मौत को गले लगाने पर मजबूर कर दिया। मुरादाबाद के मझोला थाना क्षेत्र के चर्चित मोनू हत्याकांड (आत्महत्या के लिए उकसाने) की मुख्य आरोपी सोनिया अब जेल की सलाखों के पीछे है।

फरवरी 2023 में पति मोनू की मौत के बाद से ही सोनिया फरार थी। वह अपनी पहचान छिपाकर सहारनपुर के मंडी थाना इलाके के मातागढ़ (पुराना चिलकाना अड्डा) में रह रही थी। उसे लगा था कि वक्त के साथ पुलिस उसे भूल जाएगी, लेकिन मझोला पुलिस की टीम उसकी परछाईं की तरह पीछा कर रही थी। एसआई सतीश कुमार की टीम ने सटीक सूचना के आधार पर सहारनपुर में दबिश दी और सोनिया को उस वक्त दबोच लिया जब वह बेखौफ घूम रही थी।

घटनाक्रम 23 फरवरी 2023 की उस शाम का है, जिसने गांगन वाली मैनाठेर इलाके को दहला दिया था। 35 वर्षीय मोनू ने अपने ही घर में फांसी लगाकर जीवनलीला समाप्त कर ली थी। मोनू की मौत के बाद उसकी मां रामवती ने जो दर्द बयां किया, वह सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

मां का आरोप था कि सोनिया ने मोनू को शारीरिक और मानसिक रूप से इस कदर तोड़ा था कि वह अंदर से खत्म हो चुका था। सोनिया अकेले नहीं थी। इस साजिश में पड़ोस में रहने वाले संजय और विनोद भी शामिल थे। इन सबने मिलकर मोनू को प्रताड़ित किया, उसके साथ मारपीट की और उसे जान से मारने की धमकियां दीं।

साजिश का जाल और प्रताड़ना की इंतहा

पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, सोनिया और उसके साथियों ने मोनू के लिए हर दिन एक नई चुनौती खड़ी कर दी थी। गाली-गलौज और सरेआम अपमान मोनू की जिंदगी का हिस्सा बन चुका था। इसी मानसिक प्रताड़ना से तंग आकर मोनू ने मौत को गले लगाना ही बेहतर समझा। इस मामले में पुलिस ने धारा 306 (आत्महत्या के लिए उकसाने) के तहत मामला दर्ज किया था।

न्याय की उम्मीद: चार पहले ही जा चुके हैं जेल

इस मामले में पुलिस पहले ही चार अन्य आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी थी, लेकिन मास्टरमाइंड पत्नी सोनिया पुलिस के लिए चुनौती बनी हुई थी। 12 अप्रैल 2026 को सोनिया की गिरफ्तारी के बाद उसे मुरादाबाद न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। यह गिरफ्तारी न केवल मोनू की आत्मा को शांति देगी, बल्कि उस बूढ़ी मां के लिए भी न्याय की किरण है, जिसने अपने जवान बेटे को एक सोची-समझी साजिश के तहत खो दिया था।

हादसे में बाइक सवार युवक की मौत

आर्यावर्त संवाददाता

जौनपुर। रामपुर थाना अंतर्गत सिधवन पेट्रोल पंप के सामने जौनपुर-भदोही नेशनल हाईवे पर एक सड़क हादसे में बाइक सवार युवक की मौत हो गई। कार चालक ने बाइक सवार को टक्कर मार दी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। मृतक की पहचान 45 वर्षीय संजय यादव के रूप में हुई है, जो सेरवा प्रकाशपुर, भदोही का निवासी था। वह अपनी मोटरसाइकिल से सिधवन बाजार दवा लेने जा रहे थे, तभी जौनपुर की ओर से आ रही एक सफेद रंग की तेज रफ्तार कार ने उन्हें पीछे से टक्कर मार दी।गंभीर रूप से घायल संजय यादव को तत्काल जीवनदीप अस्पताल, भदोही ले जाया गया। हालांकि, डॉक्टरों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। रामपुर थाने की पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा किया और पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया। मृतक के भाई रामलोलरक यादव ने रामपुर थाने में तहरीर दी है, जिसमें उन्होंने अज्ञात सफेद कार चालक पर लापरवाही से गाड़ी चलाने का आरोप लगाया है।तहरीर के आधार पर, रामपुर पुलिस ने रविवार रात अज्ञात कार चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

हापुड़ में भीषण सड़क हादसा... बस-ट्रक की जोरदार भिड़त, 6 बारातियों की मौत, 13 घायल

आर्यावर्त संवाददाता

हापुड़। हापुड़ जिले में रविवार देर रात एक भीषण सड़क हादसा हुआ। धौलाना-गुलावठी रोड पर यात्रियों से भरी बस और एक ट्रक की आमने-सामने से जोरदार भिड़ंत हो गई। हादसा इतना भीषण था कि मौके पर चीख-पुकार मच गई। हादसे में 6 यात्रियों की मौत हो गई, जबकि 13 गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। घटना जिले के थाना धौलाना क्षेत्र की है।

सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासन की टीमें तत्काल मौके पर पहुंचीं। बस में फंसे लोगों को कड़ी मशक्कत के बाद बाहर निकाला गया और एंबुलेंस की मदद से नजदीकी अस्पतालों में भर्ती कराया गया। घायलों को हापुड़ के मेडिकल कॉलेज और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (CHC) में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज जारी है। डॉक्टरों के अनुसार कई घायलों की हालत बेहद गंभीर है और जरूरत पड़ने पर उन्हें हायर सेंटर रेफर किया जा सकता है।

हादसे के बाद मौके पर भारी भीड़ जमा हो गई थी, जिस कारण घंटों यातायात बाधित रहा। सूचना पर पहुंची पुलिस ने वहां से तुरंत भीड़ को हटाया और यातायात बहाल किया। डीएम ने घायलों के समुचित इलाज के निर्देश दिए हैं। हादसे की सूचना मिलते ही हापुड़ के जिलाधिकारी अभिषेक पांडे, पुलिस अधीक्षक कुंवर ज्ञानंजय सिंह और मुख्य चिकित्सा अधिकारी (CMO) मौके पर पहुंचे।

अधिकारियों ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और राहत कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए।एसपी कुंवर ज्ञानंजय सिंह ने बताया कि सूचना मिलते ही पुलिस की कई टीमें मौके पर भेजी गई थीं। सभी घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया और उनके उपचार की समुचित व्यवस्था कराई जा रही है। अधिकारियों ने अस्पताल पहुंचकर घायलों का हाल जाना और डॉक्टरों को बेहतर इलाज के निर्देश दिए।

कैसे हुआ हादसा?

शुरूआती जानकारी के अनुसार हादसा तेज रफ्तार और आमने-सामने की टक्कर के कारण हुआ बताया जा रहा है। हालांकि पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और हादसे के सही कारणों का पता लगा रही है। पुलिस के अनुसार करीब घंटे भर की मशक्कत के बाद हाईड्रा मशीन की मदद बस में फंसे लोगों को बाहर निकाला गया।

अस्पताल प्रशासन के अनुसार, इस भीषण हादसे में 6 लोगों की मौत हुई है। जिसमें सोनू पुत्र जहीर, यूसुफ पुत्र बशीर, अख्तर पुत्र हमीद, यूनुस पुत्र कदीर, मुन्ना पुत्र मेहरबान और बस चालक अशोक पुत्र रतिराम शामिल हैं। वहीं 13 लोग घायल हो गए हैं, जिन्हें अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती कराया गया है।

बारात से लौट रहे थे बस में सवार यात्री

बताया जाता है कि डासना निवासी इकराम कुरैशी के बेटे की बारात गुलावठी से लौट रही थी। तभी सामने से आ रहे ट्रक से बस की भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि बस ट्रक के नीचे जा दबी और दोनों वाहन सड़क किनारे खाई में पलट गए और यात्रियों में चीख पुकार मच गई। स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी।

8 लाख में खरीदते किडनी, फिर 1 करोड़ में करते डील एंबुलेंस ड्राइवर के इशारे पर कानपुर का अस्पताल बना गुर्दा बाजार, 6 डॉक्टर भी अरेस्ट

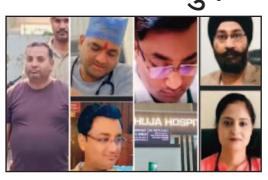

आर्यावर्त संवाददाता

कानपुर। यूपी में कानपुर से चिकित्सा जगत को शर्मसार करने वाला मामला सामने आया है। कानपुर पुलिस ने एक ऐसे संगठित किडनी ट्रांसप्लांट गैंग का भंडाफोड़ किया है, जिसके तार नेपाल से लेकर पश्चिम बंगाल और एनसीआर तक फैले हुए हैं। यह गैंग गरीबी का फायदा उठाकर चंद रुपयों के बदले लोगों के गुर्दे निकाल लेता था और उसे रईसों को करोड़ों रुपये में बेच देता था। कानपुर पुलिस की गिरफ्त में आए 6 डॉक्टर इस काले साम्राज्य के मुख्य स्तंभ थे। इनमें अहूजा नर्सिंग होम की मालकिन डॉ. प्रीति आहूजा का नाम सबसे चौंकाने वाला है, जो शहर के कई प्रतिष्ठित संगठनों में सक्रिय थीं। उनका साथ दे रहे थे उनके पति डॉ। सुरजीत आहूजा। इनके अलावा दो अन्य नर्सिंग होम के मालिक और पार्टनर डॉ। राजेश कुमार, डॉ। नरेंद्र सिंह, डॉ। रामप्रकाश कुशवाहा और डॉ। कुलदीप को भी पुलिस ने सलाखों के पीछे भेज दिया है। पुलिस का मानना है कि इन डॉक्टरों ने चिकित्सा नैतिकता को ताक पर रखकर अस्पताल को गुर्दा बाजार बना दिया था। इस पूरे गिरोह का संचालन कोई उच्च शिक्षित व्यक्ति नहीं, बल्कि आठवीं पास एंबुलेंस ड्राइवर शिवम अग्रवाल कर रहा था। शिवम ही वह कड़ी था जो डायलिसिस करा रहे ईस मरीजों को गुर्दा दिलाने का लालच देता था। वह सोशल मीडिया (टेलीग्राम और व्हाट्सएप) के जरिए ऐसे गरीबों को तलाशता था जिन्हें पैसों की सख्त जरूरत होती थी। हैरानी की बात यह है कि वह डोनर्स को मानसिक रूप से तैयार करने के लिए सदी के महानायक अमिताभ बच्चन का उदाहरण देता था। वह कहता था कि "जब एक किडनी पर अमिताभ बच्चन स्वस्थ जीवन जी सकते हैं, तो आप क्यों नहीं?" पैसे की चाहत और इस तरह के भावनात्मक जाल में फंसकर मासूम लोग अपनी किडनी देने को तैयार हो जाते थे।

नोएडा कनेक्शन और डॉ. रोहित

जांच में सामने आया है कि इस नेटवर्क का सबसे बड़ा खिलाड़ी नोएडा का डॉ। रोहित है। डॉ। रोहित अपनी टीम के साथ चार्टर्ड प्लेन या फ्लाइट से लखनऊ आता था और फिर कार के जरिए कानपुर पहुंचता था। ऑपरेशन की रात नर्सिंग होम के पूरे स्थानीय स्टाफ को छुट्टी पर भेज दिया जाता था और सीसीटीवी कैमरे मेंटेनेंस के नाम पर बंद कर दिए जाते थे। रात के अंधेरे में गुर्दा निकालने और प्रत्यारोपण करने के बाद डॉ। रोहित की टीम सुबह होने से पहले ही शहर छोड़ देती थी। अस्पताल के रिकॉर्ड में इस अवैध काम को छिपाने के लिए 'नॉर्मल सर्जरी' या 'पथरी के ऑपरेशन' का फर्जी कच्चा पर्चा बनाया जाता था।

करोड़ों का खेल, डोनर को सिर्फ चंद लाख

पुलिस कमिश्नर रघुवीर लाल के मुताबिक, एक किडनी ट्रांसप्लांट का पैकेज 60 लाख से 1 करोड़ रुपये के बीच होता था। इसमें से किडनी देने वाले गरीब व्यक्ति को महज 8 से 10 लाख रुपये थमाए जाते थे। बाकी की मोटी रकम डॉक्टरों, दलालों और हॉस्पिटल मालिकों के बीच बंटती थी। इस गिरोह ने एक अफ्रीकी महिला का भी अवैध ट्रांसप्लांट किया था, जिसका इलाज करते हुए आठवीं पास शिवम का वीडियो वायरल हुआ है।

मौत का सौदा और प्रशासनिक लापरवाही

यह धंधा सिर्फ अवैध ही नहीं, बल्कि जानलेवा भी था। कानपुर में ट्रांसप्लांट के बाद स्थिति बिगड़ने पर एक महिला की दिल्ली के मैक्स अस्पताल में मौत हो गई। इसके अलावा बिहार के रहने वाले आयुष की किडनी निकालकर मेरठ की पारुल तोमर को लगाए जाने के मामले में भी भारी सौदेबाजी के पुख्ता सबूत मिले हैं। प्रशासनिक स्तर पर भी बड़ी लापरवाही सामने आई है।

'सुनो जी, मुझे सुहागरात पर...', शादी की पहली रात दुल्हन ने रखी ऐसी शर्त, दूल्हे के छूटे पसीने

आर्यावर्त संवाददाता

आगरा। ताजनगरी के थाना जगदीशपुरा क्षेत्र से एक ऐसी वारदात सामने आई है, जिसने वैवाहिक रिश्तों और सामाजिक मर्यादाओं को झकझोर कर रख दिया है। यहां एक नवविवाहिता ने शादी की पहली ही रात (सुहागरात) अपने पति के सामने 90 लाख रुपये की भारी-भरकम मांग रख दी। रकम न मिलने पर न केवल शारीरिक संबंध बनाने से इनकार किया, बल्कि पूरे ससुराल पक्ष को जिंदा जलाने की कोशिश भी की गई। मामला सिकंदरा क्षेत्र की रहने वाली एक महिला डॉक्टर के भाई से जुड़ा है। डॉक्टर के अनुसार, उनके भाई का विवाह हाथरस की एक युवती से हुआ था। विदाई के बाद जब दुल्हन ससुराल पहुंची, तो उसने पहली रात पति को चौंका दिया। दुल्हन ने स्पष्ट कहा कि उसे यह शादी पसंद नहीं है और वह केवल पैसों के लिए आई है। उसने शर्त रखी कि यदि उसे 90 लाख रुपये नकद दिए जाएंगे, तभी वह वैवाहिक जीवन आगे बढ़ाएगी। बोली- मुझे सुहागरात पर 90 लाख चाहिए। तभी संबंध बनाऊंगी। यह सुनते ही दूल्हे के पसीने छूट गए।

जब पति और ससुराल वालों ने इतनी बड़ी रकम देने से असमर्थता जताई, तो विवाद बढ़ गया। आरोप है कि दुल्हन ने हंगामा कर अपने मायके वालों को बुला लिया। दुल्हन के परिजनों ने दबंगों के साथ पहुंचकर घर के बाहर ताला लगा दिया और पूरे परिवार को बंधक बना लिया। क्रूरता की हद तब पार हो गई जब आरोपियों ने घर में लगी पीएनजी (PNG) गैस पाइपलाइन को तोड़ दिया। उनका मकसद गैस रिसाव के जरिए पूरे घर में आग लगाकर ससुराल वालों को जिंदा जलाना था।

गहने समेटकर हुई फरार

पीड़ति परिवार ने किसी तरह शोर मचाकर पड़ोसियों की मदद से अपनी जान बचाई। आरोप है कि इस अफरा-तफरी के बीच दुल्हन सास के कीमती जेवर और अन्य सामान समेटकर मायके वालों के साथ रफूचक्कर हो गई।

कोर्ट के आदेश पर FIR दर्ज

पीड़ति पक्ष का आरोप है कि जगदीशपुरा पुलिस ने शुरुआत में उनकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया। अंततः पीड़ति डॉक्टर ने अदालत की शरण ली। कोर्ट के कड़े आदेश के बाद अब पुलिस ने दुल्हन, उसके पिता और अन्य सहयोगियों के खिलाफ गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है। हालांकि, पुलिस इस मामले को दहेज एक्ट की 'पेशबंदी' (जवाबी कार्रवाई) के नजरिए से भी देख रही है।

समाज सुधारक और संविधान के शिल्पी थे बाबा साहेब

आर्यावर्त संवाददाता

जौनपुर। पूर्वांचल विश्वविद्यालय, में भारत रत्न बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की जयंती के अवसर पर विभिन्न शैक्षणिक प्रतियोगिताओ का सफलतापूर्वक आयोजन हुआ। विश्वविद्यालय परिसर के विभिन्न विभागों एवं संख्या के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। रज्जू भैया संस्थान में पोस्टर प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, निबंध लेखन प्रतियोगिता एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने भाग लिया और डॉ. अंबेडकर के जीवन, विचारों एवं उनके सामाजिक योगदान को रचनात्मक रूप में प्रस्तुत किया। इन प्रतियोगिताओ में सफल प्रतिभागियों को डॉ अम्बेडकर की जन्मजयंती के अवसर पर 14 अप्रैल को आयोजित मुख्य कार्यक्रम में पुरस्कृत किया जायेगा। मुख्य वक्ता विधि संकाय, टी डी कॉलेज के रमेश चंद्र यादव ने कहा कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर महान समाज सुधारक, विधिवेत्ता और भारतीय संविधान के शिल्पकार थे। उनका जीवन दर्शन समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के सिद्धांतों पर आधारित था। उन्होंने समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव और अस्पृश्यता के खिलाफ संघर्ष करते हुए दलितों, वंचितों और कमजोर वर्गों को अधिकार दिलाने का कार्य किया। प्रो प्रमोद कुमार यादव ने कहा कि डॉ अम्बेडकर ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम माना। श्रमिकों, महिलाओं और अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा में भी उनका योगदान महत्वपूर्ण रहा। उनके विचार आज भी एक न्यायपूर्ण, समतामूलक और लोकतांत्रिक समाज के निर्माण के लिए प्रेरणा प्रदान करते हैं।

राज्यपाल आनंदीबेन पटेल और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आदर्श माध्यमिक विद्यालय जनभवन के नवीन भवन का किया उद्घाटन

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। राज्यपाल आनंदीबेन पटेल एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को आदर्श माध्यमिक विद्यालय, जनभवन के 5.17 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित नवीन भवन का उद्घाटन किया। मुख्यमंत्री ने इस अभिनव प्रयास के लिए राज्यपाल के प्रति आभार व्यक्त करते हुए बच्चों को सीख दी कि परिश्रम का कोई विकल्प नहीं होता और निरंतर प्रयास से ही सभी कार्य सफल होते हैं। इस अवसर पर अतिथियों ने 'हमारा जनभवन' पुस्तक का विमोचन किया तथा विद्यालय की प्रधानाचार्या और वाहन चालक को विद्यालय बस की चाबी भी प्रदान की।अपने संबोधन में मुख्यमंत्री ने कहा कि कोई भी व्यक्ति अयोग्य नहीं होता। जैसे प्रत्येक अक्षर में मंत्र

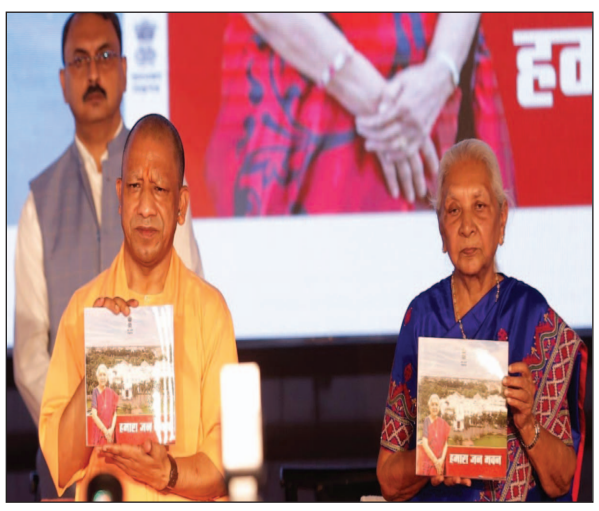

बनने की क्षमता होती है और प्रत्येक वनस्पति में औषधि बनने का गुण होता है, उसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य में योग्य बनने का सामर्थ्य होता है, केवल उसे सही मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में राज्यपाल ने एक आदर्श प्रस्तुत किया है, जिससे प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा परिषद प्रेरणा प्राप्त कर सकती हैं।मुख्यमंत्री ने बच्चों को प्रेरित करते हुए वैद्य जीवक का उदाहरण दिया और बताया कि तक्षशिला में शिक्षा प्राप्त करने के बाद गुरु ने उन्हें ऐसी वनस्पति खोजने को कहा, जिसमें औषधीय गुण न हो। कई दिनों तक वन में खोज करने के बाद भी उन्हें ऐसी कोई वनस्पति नहीं मिली, जिसमें औषधीय गुण न हो। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक वस्तु और व्यक्ति में उपयोगिता और क्षमता विद्यमान होती है।नवनिर्मित विद्यालय भवन की सराहना करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि यह शिक्षण संस्थानों के लिए एक आदर्श स्वरूप के रूप में विकसित हुआ है। उन्होंने शिक्षा विभाग के अधिकारियों से कहा कि इस स्वरूप को अन्य स्थानों पर भी अपनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि बेहतर भवन और अनुकूल वातावरण से शिक्षा का स्तर ऊंचा होता है और सर्वसमावेशी विकास को बढ़ावा मिलता है।मुख्यमंत्री ने बताया कि 5.17 करोड़ रुपये की लागत से बने इस भवन में 4.70 करोड़ रुपये राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध कराए गए, जबकि शेष धनराशि राज्यपाल के प्रयासों से सामाजिक दायित्व निधि के माध्यम से प्राप्त हुई। उन्होंने प्रयोगशाला, पुस्तकालय और कक्षाओं की सराहना करते हुए कहा कि यह विद्यालय अब विभिन्न शैक्षिक और खेल गतिविधियों का केंद्र बन रहा है।उन्होंने कहा कि यदि प्रयास किया जाए तो सरकारी विद्यालयों को भी निजी विद्यालयों के समान प्रतिस्पर्धा योग्य बनाया जा सकता है। यह आदर्श माध्यमिक विद्यालय उसी दिशा में एक सशक्त उदाहरण है। मुख्यमंत्री ने विद्यालय के बच्चों के आत्मविश्वास की सराहना करते हुए कहा कि बच्चों के भीतर बड़े लक्ष्य प्राप्त करने की क्षमता स्पष्ट दिखाई देती है।मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्यपाल ने आदर्श माध्यमिक विद्यालय के रूप में प्रदेश की प्राथमिक शिक्षा को एक नया मार्ग दिखाया है, जिसे अन्य विद्यालयों में भी अपनाया जा सकता है। उन्होंने यहां अध्ययनरत बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, वित्त मंत्री सुरेश खन्ना, माध्यमिक शिक्षा मंत्री गुलाब देवी, बेसिक शिक्षा मंत्री संदीप सिंह सहित अन्य जनप्रतिनिधि और अधिकारी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जनता दर्शन में सुनीं जन समस्याएं

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 5-कालिदास मार्ग स्थित अपने सरकारी आवास पर आयोजित जनता दर्शन कार्यक्रम में आमजन की समस्याएं सुनीं और संबंधित अधिकारियों को शिकायतों के त्वरित निस्तारण के निर्देश दिए।जनता दर्शन कार्यक्रम के दौरान बड़ी संख्या में लोग अपनी विभिन्न समस्याएं लेकर पहुंचे। मुख्यमंत्री ने प्रत्येक फरियादी की बात ध्यानपूर्वक सुनी और अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी शिकायतों का समयबद्ध एवं प्रभावी समाधान सुनिश्चित किया जाए।मुख्यमंत्री ने कहा कि जन समस्याओं के समाधान में किसी प्रकार की लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि प्राथमिकता के आधार पर समस्याओं का निस्तारण करते हुए आमजन को शीघ्र राहत उपलब्ध कराई जाए।उन्होंने यह भी कहा कि शासन की मंशा है कि जनता की समस्याओं का त्वरित समाधान हो और लोगों को अनावश्यक रूप से दफ्तरों के चक्कर न लगाने पड़ें। मुख्यमंत्री ने प्रशासन को सख्त निर्देश देते हुए कहा कि प्रत्येक शिकायत का निस्तारण निर्धारित समय सीमा के भीतर किया जाए।

विश्व शांति संदेश के साथ राजधानी में निकला भव्य शांति मार्च, केशव प्रसाद मौर्य ने किया स्वागत

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। विश्व शांति के पावन संदेश के साथ बौद्ध भिक्षुओं एवं पूज्य भन्तेगणों द्वारा राजधानी लखनऊ में एक भव्य शांति मार्च का आयोजन किया गया। यह शांति मार्च डॉ. अम्बेडकर महासभा कार्यालय, विधानसभा मार्ग से प्रारंभ होकर हजरतगंज चौराहा होते हुए उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के शिविर कार्यालय, 7- कालिदास मार्ग तक निकाला गया।उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने अपने शिविर कार्यालय पर पहुंचे पूज्य भन्तेगणों का आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस अवसर पर उन्होंने सभी भिक्षुओं को अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया तथा विश्व शांति के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के इस प्रयास की सराहना की।अपने संबोधन में उप मुख्यमंत्री ने कहा कि यह शाश्वत सत्य है कि शांति का एकमात्र मार्ग "बुद्धम् शरणम् गच्छामि" है। उन्होंने कहा कि भारत

की महान परंपरा सदैव शांति, समता और मानवता की रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा संयुक्त राष्ट्र में कही गई यह बात कि "भारत ने दुनिया को बुद्ध दिया है, युद्ध नहीं" आज के वैश्विक परिदृश्य में और अधिक प्रासंगिक हो गई है।उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में जब विश्व के अनेक देश युद्ध और अस्थिरता के दौर से गुजर रहे हैं, ऐसे में भगवान बुद्ध की शिक्षाएं मानवता के लिए आशा और मार्गदर्शन का आधार बन रही हैं। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि "विश्व एक परिवार है और शांति हमारा सबसे बड़ा अस्त्र है।"उप मुख्यमंत्री ने सम्राट अशोक महान के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने भगवान बुद्ध के उपदेशों को विश्वभर में फैलाने का ऐतिहासिक कार्य किया। उन्होंने यह भी बताया कि प्रधानमंत्री के निर्देश पर उन्हें प्रतिनिधिमंडल के साथ भगवान बुद्ध के पवित्र पिपरहवा अवशेषों को रूस के कालिमिकिया ले जाने का अवसर प्राप्त हुआ, जहां लाखों श्रद्धालुओं ने दर्शन कर अपनी आस्था प्रकट की।

नोएडा की मदरसन इकाई में मजदूरों पर कार्रवाई को लेकर कांग्रेस ने सरकार पर साधा निशाना

लखनऊ। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय ने नोएडा की मदरसन औद्योगिक इकाई में वेतन वृद्धि को लेकर चल रहे मजदूरों के प्रदर्शन और उस पर हुई पुलिस कार्रवाई को योगी सरकार की मजदूर एवं युवा विरोधी नीतियों का प्रमाण बताया है।अजय राय ने कहा कि भारी-भरकम विज्ञापनों से मजदूरों का पेट नहीं भर सकता और पुलिस के आंसू गैस के गोले भूखे पेट का समाधान नहीं हो सकते। उन्होंने आरोप लगाया कि वर्षों से मेहनत करने वाले गरीब मजदूरों के वेतन में मात्र 250 से 300 रुपये की बढ़ोतरी कर सरकार और कंपनियां उनका मजाक उड़ा रही हैं।उन्होंने कहा कि तीन दिनों से शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे मजदूरों पर पुलिस द्वारा लाठीचार्ज, आंसू गैस और दमन की कार्रवाई सरकार की वास्तविक तस्वीर को सामने लाती है।

हिंद नगर वार्ड में कूड़ादान वितरण कार्यक्रम आयोजित, नागरिकों को दिलाई स्वच्छता की शपथ

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। नगर निगम लखनऊ द्वारा स्वच्छ सर्वेक्षण 2026 के अंतर्गत जोन-8 के हिंद नगर वार्ड में कूड़ादान वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महापौर सुषमा खर्कवाल ने किया। इस दौरान क्षेत्रीय नागरिकों को कूड़ादान वितरित किए गए तथा उन्हें स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया।महापौर सुषमा खर्कवाल ने उपस्थित नागरिकों को संबोधित करते हुए स्वच्छ भारत मिशन के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्वच्छता केवल एक अभियान नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। नगर निगम द्वारा स्वच्छ सर्वेक्षण को लेकर निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप लखनऊ ने राष्ट्रीय स्तर पर तीसरा स्थान प्राप्त किया है। उन्होंने विश्वास

व्यक्त किया कि नागरिकों के सहयोग से आगामी सर्वेक्षण में लखनऊ प्रथम स्थान प्राप्त करेगा।महापौर ने सभी नागरिकों से अपील की कि वे गीले और सूखे कचरे को अलग-अलग रखें तथा नगर निगम की स्वच्छता व्यवस्थाओं में सक्रिय सहयोग दें। उन्होंने कहा कि जनभागीदारी के बिना स्वच्छता का लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता। इस दौरान उन्होंने उपस्थित नागरिकों को स्वच्छता की शपथ भी दिलाई और सभी से अपने आसपास के क्षेत्र को स्वच्छ रखने का संकल्प लेने का आह्वान किया।कार्यक्रम में स्थानीय पार्षद सौरभ सिंह 'मोनू', नामित पार्षद नेहा सिंह, जोन-8 के क्षेत्रीय अधिकारी विकास सिंह, स्वच्छता अधिकारी जितेंद्र गांधी सहित नगर निगम के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

हिंद नगर वार्ड में कूड़ादान वितरण कार्यक्रम आयोजित, नागरिकों को दिलाई स्वच्छता की शपथ

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। नगर निगम लखनऊ द्वारा स्वच्छ सर्वेक्षण 2026 के अंतर्गत जोन-8 के हिंद नगर वार्ड में कूड़ादान वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महापौर सुषमा खर्कवाल ने किया। इस दौरान क्षेत्रीय नागरिकों को कूड़ादान वितरित किए गए तथा उन्हें स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया।महापौर सुषमा खर्कवाल ने उपस्थित नागरिकों को संबोधित करते हुए स्वच्छ भारत मिशन के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्वच्छता केवल एक अभियान नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। नगर निगम द्वारा स्वच्छ सर्वेक्षण को लेकर निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप लखनऊ ने राष्ट्रीय स्तर पर तीसरा स्थान प्राप्त किया है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि नागरिकों के सहयोग से आगामी सर्वेक्षण में लखनऊ प्रथम स्थान प्राप्त करेगा।महापौर ने सभी नागरिकों से अपील की कि वे गीले और सूखे कचरे को अलग-अलग रखें तथा नगर निगम की स्वच्छता व्यवस्थाओं में सक्रिय सहयोग दें। उन्होंने कहा कि जनभागीदारी के बिना स्वच्छता का लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता। इस दौरान उन्होंने उपस्थित नागरिकों को स्वच्छता की शपथ भी दिलाई और सभी से अपने आसपास के क्षेत्र को स्वच्छ रखने का संकल्प लेने का आह्वान किया।कार्यक्रम में स्थानीय पार्षद सौरभ सिंह 'मोनू', नामित पार्षद नेहा सिंह, जोन-8 के क्षेत्रीय अधिकारी विकास सिंह, स्वच्छता अधिकारी जितेंद्र गांधी सहित नगर निगम के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। इसके अलावा जागरूकता दल, स्वच्छता दल तथा क्षेत्रीय दल के सदस्य भी कार्यक्रम में शामिल हुए।जागरूकता दल द्वारा क्षेत्र के निवासियों को कचरा पृथक्करण, स्वच्छता के महत्व और स्वच्छ सर्वेक्षण की तैयारियों के बारे में जानकारी दी गई। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिकों ने भाग लिया और स्वच्छ लखनऊ के संकल्प को मजबूत करने का भरोसा दिलाया।

नौकरी दिलाने के नाम पर ठगी करने वाला अभियुक्त गिरफ्तार, न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। थाना बिजनौर क्षेत्र में नौकरी दिलाने के नाम पर धनराशि हड़पने वाले एक अभियुक्त को पुलिस ने गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया है।प्राप्त जानकारी के अनुसार दिनांक 03 सितंबर 2025 को वादी ज्ञानेन्द्र कुमार पुत्र राम शंकर अग्निहोत्री, निवासी मकान संख्या-70, कोऑपरेटिव सोसायटी, प्रीति विहार कॉलोनी, बिजनौर, लखनऊ द्वारा लिखित तहरीर दी गई थी। इसमें नामित अभियुक्त रावेन्द्र सिंह उर्फ नितिन सिंह, निवासी ग्राम बीबीपुर, पोस्ट फूलपुर, जनपद प्रयागराज पर उच्च न्यायालय में नौकरी दिलाने के नाम पर रुपये लेकर धोखाधड़ी करने का आरोप लगाया गया था। इस संबंध में थाना बिजनौर में धारा 406 और 420 भादवि के तहत अभियोग पंजीकृत किया गया था।विवेचना के दौरान साक्ष्य संकलन के आधार पर

धारा 406 भादवि को हटाते हुए धारा 467, 468 और 471 भादवि की बढ़ोत्तरी की गई। अभियुक्त की गिरफ्तारी के लिए उच्च अधिकारियों से अन्य जनपद में जाने की अनुमति प्राप्त कर पुलिस टीम ने प्रयागराज जनपद के गद्दोपुर, शान्तिपुरम, थाना फाफामऊ क्षेत्र में दबिश दी। जहां दिनांक 12 अप्रैल 2026 को सायं लगभग 5:30 बजे अभियुक्त रावेन्द्र सिंह उर्फ नितिन सिंह को गिरफ्तार कर आवश्यक विधिक कार्यवाही की गई। इसके बाद दिनांक 13 अप्रैल 2026 को उसे न्यायालय में प्रस्तुत कर न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया।पूछताछ में ज्ञात हुआ कि अभियुक्त द्वारा वादी को उच्च न्यायालय प्रयागराज में सरकारी नौकरी दिलाने का झांसा दिया गया था तथा कूटरचित नियुक्ति पत्र देकर उससे धनराशि हड़प ली गई थी।पुलिस के अनुसार गिरफ्तार अभियुक्त का पूर्व में भी आपराधिक इतिहास रहा है। उसके विरुद्ध वर्ष 2017 में थाना विवेक विहार, शाहदरा, दिल्ली में विभिन्न धाराओं में अभियोग पंजीकृत किया जा चुका है। अभियुक्त को गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में उपनिरीक्षक गजय सिंह, उपनिरीक्षक तेजवीर सिंह तथा कांस्टेबल नीरजेश यादव, थाना बिजनौर, लखनऊ शामिल रहे।

लूट के मामले में फरार चल रहा वांछित अभियुक्त किसान पथ से गिरफ्तार

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत थाना मोहनलालगंज पुलिस ने लूट के एक वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया है।पुलिस आयुक्त अमरेन्द्र सिंह सेंगर के निर्देशानुसार तथा पुलिस उपायुक्त दक्षिणी अमित आनन्द के पर्यवेक्षण में, अपर पुलिस उपायुक्त रल्लापल्ली बसंथ कुमार एवं सहायक पुलिस आयुक्त मोहनलालगंज विकास कुमार पाण्डेय के मार्गदर्शन में प्रभारी निरीक्षक मोहनलालगंज ब्रजेश कुमार त्रिपाठी के नेतृत्व में पुलिस टीम ने यह कार्रवाई की।प्राप्त जानकारी के अनुसार दिनांक 07 अप्रैल 2026 को वादी हेमन्त सोनी पुत्र राजेन्द्र कुमार सोनी निवासी तेलीबाग, थाना पीजीआई, लखनऊ द्वारा थाना मोहनलालगंज में सूचना दी गई थी कि दिनांक 06 अप्रैल 2026 को होटल एंट्रास में आयोजित एक पारिवारिक कार्यक्रम (मुंडन संस्कार) में शामिल होने के बाद लौटते समय रात्रि लगभग 10:30 बजे वाहन पीछे करने को लेकर विपक्षी पक्ष से विवाद हो गया।आरोप है कि आरोपी पक्ष ने वादी एवं उसके भाई शंकर सोनी की गाड़ी को एक कार से रोककर दोनों को जबरन बाहर खींच लिया और डंडों से मारपीट की। इसके बाद वादी का लाइसेंसी रिवाल्वर, मोबाइल फोन तथा गले में पहनी सोने की चेन छीन ली गई। इस संबंध में थाना मोहनलालगंज पर मुकदमा संख्या 132/26 धारा 309(6) भारतीय न्याय संहिता के तहत अभियोग पंजीकृत किया गया।विवेचना के दौरान यह तथ्य सामने आया कि वादी और आरोपी पक्ष एक-दूसरे को पहले से जानते थे। दिनांक 06 अप्रैल 2026 को होटल एंट्रास में आयोजित एक मुंडन कार्यक्रम में दोनों पक्ष आमंत्रित थे।

सांस के रोगियों के उपचार में आधुनिकता और जागरूकता दोनो की है आवश्यकता: डॉ. सोनिया नित्यानन्द कुलपति केजीएमयू

सामान्य जीवन भी मुश्किल, प्रदूषण से सांस के रोगियों पर दोहरी मार: डॉ. सूर्यकान्त

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ के रेस्पिरेटरी मेडिसिन विभाग द्वारा आयोजित 'रेस्पिवॉक 2026' सम्मेलन के दूसरे दिन कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि माननीय कुलपति डॉ. सोनिया नित्यानंद (पद्मश्री) एवं रेस्पिरेटरी मेडिसिन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. सूर्यकान्त तथा अन्य विशिष्ट अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस भव्य सम्मेलन के मुख्य आयोजक डॉ. सूर्यकान्त के कुशल एवं प्रेरणादायी नेतृत्व में आज ब्राउन हॉल में देश भर के प्रख्यात चिकित्सकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, और कार्यक्रम में चार चांद लगा कर सफल बनाया।

रेस्पिवॉक-2026 सम्मेलन में

कुलपति डॉ. सोनिया नित्यानन्द ने कहा कि श्वसन रोगों के बढ़ते मामलों के बीच आधुनिक तकनीकों और जनजागरूकता का समन्वय अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि उन्नत चिकित्सा पद्धतियाँ रोगों की शीघ्र पहचान और बेहतर उपचार में सहायक हैं, लेकिन इसके साथ-साथ लोगों में लक्षणों की समय पर पहचान, प्रदूषण से बचाव और स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूकता भी जरूरी है। 'रेस्पिवॉक-2026' के सफल आयोजन हेतु डॉ. सूर्यकान्त को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि उनके नेतृत्व में यह सम्मेलन ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी रहा। इस पहल से श्वसन रोगों के उपचार और जागरूकता को नई दिशा मिलेगी, जो समाज के लिए अत्यंत लाभकारी है।

ऑर्गनाइजेशन फॉर कान्सर्नवेशन ऑफ एन्वारन्मेन्ट एण्ड नेचर (ओशन) के अध्यक्ष डा0 सूर्यकान्त ने स्वयं वायु मित्र अभियान पर अपना अत्यंत प्रभावशाली व्याख्यान प्रस्तुत किया। जिसमें उन्होंने वायु प्रदूषण से निपटने के लिए सामुदायिक जागरूकता और जन भागीदारी पर विशेष बल दिया। डॉ. सूर्यकान्त एक श्वसन रोग विशेषज्ञ के रूप में मानते हैं कि आज "स्वच्छ वायु" केवल पर्यावरण का मुद्दा नहीं, बल्कि एक अनिवार्य चिकित्सकीय आवश्यकता बन चुकी है। जिस प्रकार दवाइयाँ और स्वस्थ जीवनशैली जरूरी हैं, उसी प्रकार स्वच्छ हवा भी अच्छे स्वास्थ्य की आधारशिला है। भारत के कई शहर, विशेषकर दिल्ली और लखनऊ, लगातार अत्यधिक वायु प्रदूषण की चपेट में हैं। यहाँ पीएम 2.5 का स्तर सुरक्षित मानकों से कई गुना अधिक है, जिससे हर व्यक्ति अनजाने में विषैली हवा में सांस ले रहा है। इसका सीधा प्रभाव लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। डॉ. सूर्यकान्त के अनुसार उनके दैनिक चिकित्सा अनुभव में अस्थमा, एलर्जी, लगातार खांसी और सांस फूलने के मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। शोध बताते हैं कि प्रदूषित शहरों में बच्चों में अस्थमा का खतरा काफी बढ़ गया है, और लगभग हर तीन में से एक बच्चा फेफड़ों की कार्यक्षमता में कमी से प्रभावित हो सकता है। वे बताते हैं कि वायु प्रदूषण केवल फेफड़ों को ही नहीं, बल्कि पूरे शरीर को प्रभावित करता है। सूक्ष्म कण रक्त में मिलकर हृदय रोग, स्ट्रोक, मधुमेह और कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का खतरा बढ़ाते हैं। यहां तक कि गर्भावस्था में भी इसका प्रभाव भूरण के विकास पर पड़ता है। डॉ. सूर्यकान्त इस बात पर जोर देते हैं कि समय पर पहचान और रोकथाम बेहद जरूरी है, क्योंकि कई लोग शुरुआती लक्षणों को नजरअंदाज कर देते हैं। वे "वायु मित्र" की अवधारणा को महत्वपूर्ण बताते हुए कहते हैं कि हर नागरिक छोटे-छोटे प्रयासों से बड़ा बदलाव ला सकता है जैसे वाहन का कम उपयोग, कचरा न जलाना, ऊर्जा बचाना और वृक्षारोपण करना। उन्होने सभी प्रतिभागियों को वायु प्रदूषण के खिलाफ जागरूकता पैदा करने के लिए "वायु मित्र" बनने की शपथ दिलायी।

इस महत्वपूर्ण सत्र की अध्यक्षता डॉ. अश्वनी कुमार मिश्रा और डॉ. गौरव श्रीवास्तव द्वारा की गई। इसी क्रम में चर्चा को आगे बढ़ाते हुए डॉ. रुचि दुआ ने मेटाबोलिक सीओपीडी पर और लेफ्टिनेंट कर्नल डॉ. किसलय किशोर ने सीओपीडी रोकथाम के वैश्विक दृष्टिकोण पर अपने विचार रखे। दमा के भविष्य और इसकी रोकथाम पर डॉ. अभिषेक टंडन और डॉ. वी. के. जैन ने विस्तृत जानकारी साझा की। फेफड़ों की गंभीर बीमारी आई.एल.डी. के सत्र में डॉ. अशोक कुमार सिंह ने शुरुआती हस्तक्षेप और डॉ. अनुभूति सिंह ने ऑटोइम्यून आई.एल.डी. के बारे में विस्तार से बताया, जबकि डॉ. रंगनाथ टी.जी. ने फेफड़ों के फाइब्रोसिस से जुड़े नवीन शोध प्रस्तुत किए। डॉ. सूर्यकान्त ने बताया कि सम्मेलन के तकनीकी सत्र में विशेषज्ञों ने आधुनिक चिकित्सा उपकरणों के महत्व पर प्रकाश डाला। दिल्ली एम्स से आये डॉ. सौरभ मित्तल ने गहन चिकित्सा इकाई (आईसीयू) में क्रायोथेरेपी के बढ़ते उपयोग पर चर्चा की, वहीं डॉ. संदीप भट्टाचार्य ने रेस्पिरेटरी मेडिसिन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के क्रांतिकारी महत्व को रेखांकित किया। इसी कड़ी में डॉ. अंकित भाटिया ने बेनाइन एयरवे स्टेनोसिस जैसे जटिल विषयों पर अपनी बात रखी। सम्मेलन का एक मुख्य आकर्षण डॉ. मनोज कुमार गोयल द्वारा दिया गया प्रतिष्ठित खन्ना मुखर्जी नाथ मेमोरियल व्याख्यान रहा, जिसकी अध्यक्षता डॉ. सूर्यकान्त, डॉ. आर ए एस कुशवाहा और डॉ. अंकित कुमार ने की।

आत्मसमर्पित माओवादियों का आजीविकामूलक गतिविधियों से सुधर रहा भविष्य

जिन हाथों ने कभी बंदूक थामकर हिंसा की मार्ग अपनाया था, अब वहीं हाथ अपने हुनर का कमाल दिखा रहे हैं। भानुप्रतापपुर के पास ग्राम चौगेल के पुनर्वास केन्द्र में प्रशिक्षण प्राप्त आत्मसमर्पित नक्सलियों द्वारा हुनर दिखाते हुए काष्ठ कला से नेम प्लेट, छत्तीसगढ़ शासन का 'लोगोÓ, ग्राम पंचायतों के लिए बोर्ड, बच्चों के लिए की-रिंग सहित अन्य सजावटी सामग्री तैयार की जा रही है, साथ ही कपड़े का थैला, कार्यालयों के लिए बस्ता भी तैयार किया जा रहा है। सरकार द्वारा घोषित नक्सल पुनर्वास नीति के तहत कलेक्टर श्री निलेशकुमार महादेव क्षीरसागर के मार्गदर्शन में जिला प्रशासन कांकेर द्वारा आत्मसमर्पित नक्सलियों को कुशल और दक्ष बनाने का सार्थक प्रयास किया जा रहा है। यहां पर उन्हें काष्ठशिल्प के साथ ही इलेक्ट्रिशियन, ड्रायविंग, सिलाई, राजमिस्त्री जैसे पाठ्यक्रमों का प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। कभी नक्सली गतिविधियों में संलिप्त रहे युवक-युवतियॉ अब विभिन्न व्यवसाय में दक्ष हो रहे हैं, ताकि वे समाज की मुख्यधारा में शामिल होने के बाद आजीविकामूलक गतिविधियों से जुड़कर सम्मानपूर्वक जीवन निर्वाह कर सकें।

वर्षों से लाल आतंक के साए में हिंसा का दंश झेल रहा बस्तर संभाग अब विकास की ओर आगे बढ़ रहा है। शासन द्वारा नक्सल मुक्त बस्तर घोषित किया जा चुका है। हिंसा की राह त्यागकर मुख्यधारा में लौटे नक्सलियों को सरकार कौशल विकास का प्रशिक्षण दे रही है, ताकि वे सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर सकें। आत्मसमर्पित नक्सलियों को पुनर्वास नीति-2025 के अंतर्गत भानुप्रतापपुर विकासखंड के पास ग्राम चौगेल (मुल्ला) कैम्प में विभिन्न सृजनात्मक और रोजगारमूलक गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कभी बीएसएफ का कैम्प रहा चौगेल (मुल्ला) का यह कैम्प अब हुनर सिखाने वाला गढ़ बन चुका है। यहां पर जिला प्रशासन द्वारा मुख्यधारा में लौटे 40 आत्मसमर्पित माओवादियों को अलग-अलग पाठयक्रमों जैसे- काष्ठ शिल्प, इलेक्ट्रिशियन, सिलाई, ड्राइविंग, राजमिस्त्री इत्यादि का प्रशिक्षण दिया जा रहा है, साथ ही उनकी शिक्षा पर भी विशेष ध्यान दी जा रही है। पढ़ने के लिए पाठ्य सामग्री, पुस्तकें, पेन-पेंसिल दिए गए हैं तथा पढ़ाने के लिए योग्य शिक्षकों की व्यवस्था भी की गई है। स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा आत्मसमर्पित नक्सलियों का नियमित रूप से स्वास्थ्य परीक्षण कर आवश्यकतानुसार दवाईयां भी दी जाती हैं। कैम्प में मनोरंजनात्मक गतिविधियां जैसे कैरम, वाद्य यंत्र, विभिन्न प्रकार के खेल भी आयोजित किया जाता है। चौगेल पुनर्वास केंद्र में राजमिस्त्री, इलेक्ट्रिशियन, वाहन चालक के साथ ही कांकेर में घुड़सवारी का भी प्रशिक्षण दिया जा चुका है। वर्तमान में सिलाई मशीन, काष्ठ शिल्प एवं असिस्टेंट इलेक्ट्रिशियन का प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। स्वरोजगार के लिए सशक्त बनाने हेतु कृषि विभाग, मत्स्य पालन विभाग, उद्यानिकी, पशुधन विकास विभाग के साथ 'बिहानÓ के द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन भी किया गया है।

पुनर्वास केंद्र में प्रशिक्षण उपरांत नक्सली पीड़ति एवं आत्मसमर्पित नक्सलियों को रोजगार से जोड़ने वाला कांकेर पहला जिला बन चुका है। कलेक्टर श्री निलेशकुमार महादेव क्षीरसागर ने अपने हाथों से तीन नक्सली पीड़ति और एक आत्मसमर्पित नक्सली को निजी क्षेत्र में नौकरी के लिए नियुक्ति पत्र सौंपा, इनमें पुनर्वासित सगनूराम आंचला एवं नक्सल पीड़ति रोशन नेताम, बीरसिंह मंडावी और संजय नेताम शामिल थे। इन सभी को निजी फर्म का नियुक्ति पत्र प्रदान किया गया, जहां उन्हें 15 हजार रूपए प्रतिमाह मानदेय और अन्य प्रकार की वित्तीय सुविधाएं प्राप्त होंगी। इन्होंने चौगेल कैम्प में असिस्टेंट इलेक्ट्रिशियन का प्रशिक्षण प्राप्त किया था तथा उन्हें निजी क्षेत्र में नियोजित किया गया है। मुख्यधारा में लौटकर प्रशिक्षण के उपरांत रोजगार प्रदान करने के मामले में उत्तर बस्तर कांकेर पहला जिला है। निजी क्षेत्र में नौकरी मिलने पर खुशी व्यक्त करते हुए माओवाद पीड़ति श्री बीरसिंह मंडावी ने कहा कि ग्राम मुल्ला (चौगेल) के कैम्प में पुनर्जीवन मिला है, जहां निःशुल्क प्रशिक्षण देकर उन्हें कुशल एवं पारंगत बनाया गया, वहीं प्रशिक्षण के बाद जिला प्रशासन द्वारा रोजगार भी उपलब्ध कराया जा रहा है।

भारत के अंतिम छोर पर स्थित स्वास्थ्य एवं कल्याण इकोसिस्टम को मजबूत बनाना

हम यह दिखाई दे रहा है कि होम्योपैथी कैसे जनजातीय क्षेत्रों, ग्रामीण इलाकों और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी वाले शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की आपूर्ति से जुड़ी महत्वपूर्ण कमियों को दूर कर रही है।

प्रतापराव जाधव

अब जबकि भारत सभी के लिए न्यायसंगत, समावेशी और समग्र स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे के सपने को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, हमें एक मौलिक प्रश्न पूछना होगाः हम अंतिम गांव के अंतिम व्यक्ति तक सही समय पर गुणवत्तापूर्ण देखभाल पहुंचना कैसे सुनिश्चित करें?

इसका जवाब केवल बुनियादी ढांचे के विस्तार या उन्नत प्रौद्योगिकियों के उपयोग में ही नहीं, बल्कि उन प्रणालियों को मजबूत करने में भी निहित है जो स्वाभाविक रूप से सुलभ, सस्ती और समुदायों के भरोसे पर खरे उतरते हों। इस संदर्भ में, होम्योपैथी भारतीय पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों के साथ-साथ एक मौन लेकिन शक्तिशाली ताकत के रूप में उभर रही है और जमीनी स्तर पर समग्र स्वास्थ्य से जुड़े बुनियादी ढांचे को बदल रही है।

हम यह दिखाई दे रहा है कि होम्योपैथी कैसे जनजातीय क्षेत्रों, ग्रामीण इलाकों और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी वाले शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की आपूर्ति से जुड़ी महत्वपूर्ण कमियों को दूर कर रही है। इसके प्रभाव का पता केवल व्यापकता से ही नहीं, बल्कि सबसे अधिक जरूरत वाले स्थानों - यानी अंतिम छोर - तक पहुंचने की क्षमता से भी चल रहा है।

अब जबकि हर वर्ष 10 अप्रैल को मनाया जाने वाला 'विश्व होम्योपैथी दिवस करीब है, यह इस बात पर विचार करने का एक सही मौका है कि यह प्रणाली केवल व्यक्तिगत कल्याण ही नहीं बल्कि समग्र कल्याण का एक ऐसा मॉडल बनाने में भी योगदान दे रही है जो किफायती, पर्यावरण के अनुकूल और सामाजिक रूप से समावेशी हो। इस वर्ष विश्व होम्योपैथी दिवस की थीम सतत स्वास्थ्य के लिए होम्योपैथी है।

18वीं शताब्दी में सैमुअल हैनिमैन द्वारा विकसित और 19वीं शताब्दी में भारत लाई गई, होम्योपैथी सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरेंचर यानी समान से समान का उपचार के सिद्धांत पर आधारित है। दशकों से एक समग्र और रोगी-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाते हुए, यह भारत की बहुआयामी स्वास्थ्य एवं कल्याण प्रणाली का एक अभिन्न अंग बन गई है।

जमीनी स्तर पर होम्योपैथी की सबसे बड़ी खूबी इसकी निरंतर देखभाल सुनिश्चित करने की क्षमता है। कई पिछड़े इलाकों में स्वास्थ्य सेवा टुकड़ों में बिखरी हुई नहीं होती, बल्कि निरंतर और रिश्तों से सचालित होती है। होम्योपैथी का व्यक्ति-केनद्रित उपचार का दृष्टिकोण, खासतौर पर पुरानी बीमारियों, बार-बार होने वाले संक्रमणों और जीवनशैली संबंधी विकारों के प्रबंधन के क्रम में चिकित्सक और रोगी के बीच दीर्घकालिक जुड़ाव को बढ़ावा देता है। यह निरंतरता उपचार के प्रति रोगी के समर्पण और समग्र स्वास्थ्य से जुड़े नतीजों में उल्लेखनीय सुधार करती है।

आज भारत में 290 से अधिक होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल हैं। साथ ही, देशभर में चिकित्सकों का एक विशाल नेटवर्क भी उपलब्ध है। फिर भी, होम्योपैथी के असली प्रभावों को संस्थानों में नहीं बल्कि जमीनी स्तर पर - झारखंड के जनजातीय जिलों, छत्तीसगढ़ के वन क्षेत्रों में और हिमाचल प्रदेश की दूरदराज की बस्तियों में - बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। वहां एक अकेला चिकित्सक भी सामुदायिक स्वास्थ्य से जुड़े नतीजों में बदलाव ला सकता है।

होम्योपैथी की प्रमुख खूबियों में से एक इसकी सरलता भी है। दवाइयां किफायती होती हैं, इन्हें लाना-ले जाना आसान होता है और इनके भंडारण के लिए किसी जटिल भंडारण संरचना की जरूरत ही नहीं होती है। कमजोर आपूर्ति श्रृंखलाओं और सीमित स्वास्थ्य सेवा कर्मियों वाले इलाकों में, होम्योपैथी की ये विशेषताएं अनमोल हो जाती हैं।

जनजातीय समुदायों, जो हमारी आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और अक्सर बीमारियों का बेमेल बोझ झेलते हैं, के लिए स्वास्थ्य सेवाओं को सांस्कृतिक रूप से भी अनुकूल होना चाहिए। होम्योपैथी का सौम्य और गैर-आक्रामक रवैया पारंपरिक उपचार पद्धतियों के अनुरूप है, जिससे यह अपेक्षाकृत अधिक स्वीकार्य और सुलभ हो जाता है। इसी क्षमता को पहचानते हुए, भारत सरकार ने होम्योपैथी को मुख्यधारा की स्वास्थ्य सेवाओं साथ जोड़ने के लिए कई कदम उठाए हैं। राष्ट्रीय आयुष मिशन के तहत, 12,500 से अधिक आयुष्मान आरोग्य मंदिर (आयुष) स्थापित किए गए हैं, जो सामुदायिक स्तर पर होम्योपैथी सहित व्यापक प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि होम्योपैथी भारत में गैर-संक्रामक रोगों से निपटने में भी योगदान दे रही है। केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच) ने मधुमेह, हृदय रोग और अन्य दीर्घकालिक बीमारियों से निपटने से संबंधित राष्ट्रीय कार्यक्रमों में होम्योपैथी को जोड़ा है। यह प्राथमिक देखभाल से परे इसकी प्रासंगिकता को दर्शाता है।

आपूर्ति के नए-नए मॉडल भी उतने ही उत्साहजनक हैं। आयुष्मान आरोग्य मंदिरों के अंतर्गत सेवाओं के एक ही स्थान पर उपलब्ध होने की सुविधा ने पहुंच और विश्वास दोनों को बेहतर बनाया है। चलंत चिकित्सा इकाइयां जहां दूरदराज के इलाकों तक पहुंच रही हैं, वहीं सामुदायिक सहायता से जुड़ी पहलों और महामारी से निपटने से संबंधित कार्यक्रमों ने विभिन्न सार्वजनिक स्वास्थ्य परिदृश्यों में होम्योपैथी की अनुकूलता को प्रदर्शित किया है।

शायद सबसे कारगर मॉडल बुनियादी होम्योपैथी में प्रशिक्षित सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का है। सही ज्ञान और रेफरल सिस्टम के सहयोग से, ये कार्यकर्ता न्यूनतम लागत पर स्वास्थ्य सेवाओं का व्यापक विस्तार कर सकते हैं। स्वास्थ्य रक्षा जैसे कार्यक्रम और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीसीआरएच) द्वारा संचालित संपर्क संबंधी पहलों ने पहले ही दिखा दिया है कि समुदाय-आधारित दृष्टिकोण सार्थक नतीजे दे सकते हैं।

भविष्य को देखते हुए, सतत स्वास्थ्य एवं कल्याण के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। स्वास्थ्य सेवाओं की बढ़ती लागत, पुरानी बीमारियों का बढ़ता बोझ और रोगाणुरोधी प्रतिरोध जैसी उभरती चुनौतियों से निपटने हेतु ऐसे समाधानों की जरूरत है जो न केवल कारगर हों बल्कि आर्थिक और पर्यावरणीय रूप से व्यवहारिक भी हों।

होम्योपैथी इस दृष्टिकोण के साथ स्वाभाविक रूप से मेल खाती है। इसके कम लागत वाले उपचार परिवारों और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों पर वित्तीय बोझ को कम करते हैं। जबकि इसका न्यूनतम पर्यावरणीय प्रभाव, पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार स्वास्थ्य और कल्याण संबंधी कार्यप्रणालियों का समर्थन करता है।

अब हमारा ध्यान इन प्रयासों को व्यापक स्तर पर कार्यान्वित करने पर होना चाहिए। इन प्रयासों में कम सुविधा वाले क्षेत्रों में प्रशिक्षण को मजबूत करना, दवाओं की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित करना, गहन अनुसंधान एवं दस्तावेजीकरण को बढ़ावा देना और सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को सशक्त बनाना शामिल है।

टिप्पणी

गिरफ्तारी का मामला गंभीर

गिरफ्तार लोगों में सबसे संदिग्ध भूमिका अमेरिकी नागरिक मैथ्यू आरोन वैन डाइक की है। वह पहले लीबिया और सीरिया के सशस्त्र संघर्षों में शामिल रह चुका है। वह म्यांमार स्थित विद्रोहियों को ड्रोन युद्धकला सिखाने में लगा हुआ था।

छह यूक्रेनी और एक अमेरिकी नागरिक की गिरफ्तारी का मामला गंभीर है। यूक्रेन सरकार ने इन गिरफ्तारियों पर विरोध जता कर इसे रहस्यमय भी बना दिया है। इन लोगों की गिरफ्तारी बागी संगठनों की मदद करने और अवैध हथियार उपलब्ध कराने के आरोप में हुई है। ऐसे में बिना पूरा सच सामने आए यूक्रेन सरकार उनके पक्ष में क्यों खड़ी हो गई? आरोप है कि इन लोगों ने यूरोप से ड्रोन की भारी खेप मंगा कर उसे म्यांमार के सशस्त्र विद्रोही संगठनों को उपलब्ध कराया। ये लोग भारत आकर बिना परमिट हासिल किए मिजोरम चले गए। वहां से सीमा पार कर म्यांमार गए। वहां से लौटने पर भारत की जांच एजेंसी एनआईए ने उन्हें गिरफ्तार किया।

एनआईए के अनुसार म्यांमार के जिन गुटों की मदद ये आरोपी कर रहे थे, उनके भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के विद्रोही संगठनों से हथियारों के आदान-प्रदान एवं प्रशिक्षण में सहयोग के संबंध हैं। ये जग-जाहिर है कि म्यांमार के गृह युद्ध में बाहरी शक्तियों का हाथ भी है। उस संघर्ष के कारण बड़ी संख्या में शरणार्थी भारत आए हैं। बल्कि आरोप है कि वहां से संबंधित उग्रवादियों ने मणिपुर और मिज़ोरम में अपने ठिकाने बना लिए हैं। नई दिल्ली की अदालत में पेशी के दौरान एनआईए ने कहा कि गिरफ्तार लोग भाड़े के सैनिक की भूमिका निभा रहे थे। उनकी गतिविधियां भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बनी हैं। एजेंसी ने उन लोगों पर गैर-कानूनी गतिविधि (निवारण) अधिनियम (यूएपीए) के तहत मामला दर्ज किया है।

गिरफ्तार लोगों में सबसे संदिग्ध भूमिका अमेरिकी नागरिक मैथ्यू आरोन वैन डाइक की बताई गई है। वह पहले लीबिया और सीरिया के सशस्त्र संघर्षों में शामिल रहा है, जहां बाहरी मदद से शासकों को हटाया गया था। एनआईए का आरोप है कि वह अपने युद्ध अनुभव का उपयोग म्यांमार स्थित विद्रोहियों को ड्रोन युद्धकला सिखाने में कर रहा था। तो कुल मिलाकर ये गिरफ्तारियां उत्तर-पूर्व में विदेशी हस्तक्षेप की चिंताजनक स्थितियों की ओर इशारा करती हैं। अपेक्षित है कि इस मामले की पूरी जांच हो और इसे अंजाम तक पहुंचाया जाए। इस बीच यूक्रेन के विरोध को नजरअंदाज कर दिया जाना चाहिए।

ब्लॉग

विधानसभा चुनावों में लोकतंत्र की अग्निपरीक्षा और सत्ता के नए समीकरण

योगेश कुमार गोयल

पांच राज्यों में हो रहे विधानसभा चुनावों ने देश की राजनीति को उबाल पर ला दिया है। केरल से लेकर असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और केंद्र शासित प्रदेश पुदुचेरी तक सियासी हलचल अपने चरम पर है। रैलियों की गूंज, वादों की बरसात और आरोप-प्रत्यारोप के तीखे तीरों के बीच लोकतंत्र का यह उत्सव अब निर्णायक मोड़ पर पहुंच चुका है। हर राजनीतिक दल अपने-अपने एजेंडे, घोषणापत्र और रणनीति के साथ मैदान में है और मतदाताओं को अपने पक्ष में करने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहा है। इस बार का चुनाव केवल सरकार बनाने का साधन नहीं बल्कि बीते पांच वर्षों के कामकाज का जनमत संग्रह और आने वाले राजनीतिक भविष्य की दिशा तय करने वाला निर्णायक क्षण है।

इन पांच राज्यों की कुल 824 विधानसभा सीटों पर लगभग 17.4 करोड़ मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। यह केवल आंकड़ों का खेल नहीं बल्कि 116 लोकसभा सीटों के प्रभाव क्षेत्र से जुड़ा हुआ वह राजनीतिक रणक्षेत्र है, जो राष्ट्रीय राजनीति की धुरी को प्रभावित कर सकता है। चुनाव कार्यक्रम भी बेहद दिलचस्प है, असम, केरल और पुदुचेरी में 9 अप्रैल को मतदान होगा, तमिलनाडु में 23 अप्रैल को और पश्चिम बंगाल में दो चरणों (23 और 29 अप्रैल) में वोट डाले जाएंगे। नतीजे 4 मई को घोषित होंगे और उसी दिन यह स्पष्ट हो जाएगा कि जनता ने किसके पक्ष में अपना विश्वास व्यक्त किया। इस बार का चुनावी परिदृश्य कई स्तरों पर जटिल और बहुआयामी है। सत्ताधारी दल जहां अपने विकास कार्यों, कल्याणकारी योजनाओं और 'डबल इंजन' जैसे नारों के सहारे जनता तक पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं, वहीं विपक्ष बेरोजगारी, महंगाई, सामाजिक असमानता और प्रशासनिक खामियों को मुद्दा बनाकर आक्रामक रुख अपनाए हुए है। यह संघर्ष अब केवल सत्ता का नहीं रहा बल्कि विचारधारा, नीतियों और विकास के मॉडलों की प्रतिस्पर्धा में बदल चुका है।

सबसे अधिक चर्चा का केंद्र बना हुआ है पश्चिम बंगाल, जहां राजनीतिक तापमान सबसे ज्यादा है। 294 सीटों वाली विधानसभा में 6.44 करोड़ मतदाता अपने मताधिकार का उपयोग करेंगे। पिछले चुनाव में तृणमूल कांग्रेस ने प्रचंड बहुमत हासिल कर सत्ता पर कब्जा बनाए रखा था जबकि भाजपा ने मुख्य विपक्षी दल के रूप में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई थी। इस बार मुकाबला और अधिक तीखा हो गया है। तृणमूल कांग्रेस अपने 'बंगाल मॉडल', महिला सशक्तिकरण योजनाओं और क्षेत्रीय अस्मिता के मुद्दों के साथ मैदान में है, वहीं भाजपा 'डबल इंजन' सरकार के वादे और घुसपैठ जैसे मुद्दों को प्रमुखता दे रही है। रोजगार, भ्रष्टाचार और प्रशासनिक पारदर्शिता जैसे मुद्दे भी चुनावी विमर्श के केंद्र में हैं। विश्लेषकों का मानना है कि यहां मुकाबला बेहद कांटे का होगा, एक तरफ ममता बनर्जी की राजनीतिक विरासत दांव पर है तो दूसरी ओर भाजपा के लिए यह पूर्वी भारत में विस्तार का सुनहरा अवसर है।

असम का चुनाव भी कम दिलचस्प नहीं है। 126 सीटों वाली विधानसभा में 2.25 करोड़ मतदाता निर्णायक भूमिका निभाएंगे। यहां मुख्य सवाल यही है कि क्या भाजपा लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी कर पाएगी या कांग्रेस और उसके सहयोगी दल वापसी का रास्ता तैयार करेंगे। मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा के नेतृत्व में भाजपा विकास, बुनियादी ढांचे और सुरक्षा के मुद्दों को लेकर जनता के बीच है। वहीं विपक्ष सीएए-एनआरसी, बेरोजगारी और क्षेत्रीय पहचान जैसे मुद्दों को उठाकर सरकार को घेरने की कोशिश कर रहा है। राष्ट्रीय स्तर के नेताओं की सक्रियता ने इस चुनाव को और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। असम में परिणाम न केवल राज्य की राजनीति बल्कि पूर्वोत्तर भारत में शक्ति संतुलन को भी प्रभावित करेंगे।

दक्षिण भारत में तमिलनाडु और केरल की राजनीति अपनी विशिष्ट पहचान रखती है। तमिलनाडु में द्रविड़ राजनीति का प्रभाव इतना गहरा है कि राष्ट्रीय दलों की भूमिका सीमित हो जाती है। 234 सीटों वाली विधानसभा में 5.67 करोड़ मतदाता मतदान करेंगे। पिछले चुनाव में डीएमके गठबंधन ने सत्ता हासिल की थी और इस बार भी वह अपने 'द्रविड़ मॉडल', सामाजिक न्याय और कल्याणकारी योजनाओं के दम पर मैदान में है। वहीं एआईएडीएमके गठबंधन महंगाई, बिजली संकट और स्थानीय मुद्दों को लेकर सरकार पर हमला बोल रहा है। इसके अलावा अभिनेता विजय की पार्टी का चुनावी मैदान में उतरना एक नया समीकरण बना सकता है, खासकर युवा मतदाताओं के बीच।

केरल में 140 सीटों के लिए 2.7 करोड़ मतदाता मतदान करेंगे। यहां का चुनाव पारंपरिक रूप से सत्ता परिवर्तन के लिए जाना जाता रहा है लेकिन पिछले चुनाव में वाम मोर्चे ने लगातार दूसरी बार जीत दर्ज कर इतिहास रच दिया था। इस बार यदि वह तीसरी बार सत्ता में आता है तो यह एक नया राजनीतिक अध्याय होगा। वाम मोर्चा अपने स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक कल्याण के मॉडल को प्रमुखता दे रहा है जबकि कांग्रेस नेतृत्व वाला यूडीएफ महंगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार के मुद्दों को लेकर हमलावर है। भाजपा भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की कोशिश में है, जिससे मुकाबला त्रिकोणीय होता जा रहा है।

पुदुचेरी भले ही छोटा केंद्र शासित प्रदेश हो, लेकिन यहां की राजनीति बेहद संवेदनशील और निर्णायक है। 30 सीटों वाली विधानसभा में 9.44 लाख मतदाता मतदान करेंगे। यहां गठबंधन राजनीति का महत्व सबसे अधिक है, जहां छोटे-छोटे वोट अंतर भी सत्ता की दिशा तय कर सकते हैं। पिछले चुनाव में एनडीए गठबंधन ने सत्ता हासिल की थी और इस बार भी वह अपनी स्थिति मजबूत करने की कोशिश में है, जबकि कांग्रेस और क्षेत्रीय दल सत्ता वापसी के लिए संघर्षरत हैं। इन सभी राज्यों में एक समान बात यह है कि वोट प्रतिशत और सीटों का समीकरण हमेशा सीधा नहीं होता। कई बार मामूली वोट अंतर भी भारी सीट अंतर में बदल जाता है। यही कारण है कि राजनीतिक दल बूथ स्तर तक अपनी रणनीति को मजबूत कर रहे हैं। सोशल मीडिया और डिजिटल प्रचार ने चुनावी अभियान को एक नई दिशा दी है, जहां नैरेटिव की लड़ाई केवल मैदान में नहीं बल्कि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी लड़ी जा रही है।

चुनावी मुद्दों की बात करें तो इस बार कोई एक मुद्दा हावी नहीं है। रोजगार, महंगाई, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि संकट और महिला सशक्तिकरण जैसे मुद्दे अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग रूप में सामने आ रहे हैं। यही विविधता इन चुनावों को और अधिक जटिल और रोचक बनाती है। राजनीतिक दृष्टि से इन चुनावों को 2029 के लोकसभा चुनाव का सेमीफाइनल भी माना जा रहा है। इन राज्यों से आने वाली 116 लोकसभा सीटें राष्ट्रीय राजनीति में निर्णायक भूमिका निभाती हैं। यदि भाजपा असम में अपनी पकड़ बनाए रखती है, पश्चिम बंगाल में बेहतर प्रदर्शन करती है और दक्षिण भारत में अपनी उपस्थिति मजबूत करती है, तो उसकी राष्ट्रीय स्थिति और सुदृढ़ हो सकती है। वहीं, यदि तृणमूल कांग्रेस बंगाल में अपनी सत्ता बरकरार रखती है तो ममता बनर्जी विपक्षी राजनीति की प्रमुख धुरी बनी रह सकती हैं। केरल में वाम मोर्चे की जीत वामपंथी राजनीति के लिए नई ऊर्जा लेकर आएगी जबकि तमिलनाडु में डीएमके की निरंतरता द्रविड़ राजनीति की दिशा तय करेगी।

कुल मिलाकर, यह चुनाव केवल राजनीतिक दलों के बीच मुकाबला नहीं बल्कि लोकतंत्र की सबसे बड़ी परीक्षा है। मतदाता इस बार खामोश जरूर हैं लेकिन उनकी चुप्पी के भीतर गहराई से सोच-विचार और निर्णय की प्रक्रिया चल रही है। 4 मई को जब परिणाम सामने आएंगे, तभी यह स्पष्ट होगा कि किसने जनता की अपेक्षाओं को समझा और किसे आत्ममंथन की आवश्यकता है। लोकतंत्र का यह महापर्व एक बार फिर यह सिद्ध करने जा रहा है कि अंतिम निर्णय जनता के हाथ में होता है और वही निर्णय देश की राजनीति की दिशा और दशा तय करता है।

गुरुग्राम से उठी चिंगारी, नोएडा में गोलीकांड के बाद भड़की बुलंदशहर तक आंच, कैसे-कब और क्यों शुरू हुआ नोएडा का मजदूर आंदोलन?

नोएडा में मजदूरों का उग्र प्रदर्शन, दिल्ली–गाजियाबाद से आने वाली सड़कें जाम कई किलोमीटर तक लंबी कतारें

नोएडा। नोएडा में वेतन बढ़ोतरी की मांग को लेकर चल रहा मजदूरों का प्रदर्शन अब जाम और अफरा-तफरी का कारण बन गया है। सोमवार को गाजियाबाद-नोएडा बॉर्डर पर प्रदर्शनकारियों ने सड़क को जाम कर दिया, जिससे पूरे इलाके में यातायात पूरी तरह प्रभावित हो गया। हालात ऐसे हो गए कि कई किलोमीटर तक वाहनों की लंबी कतारें लग गईं और लोगों को घंटों जाम में फंसे रहना पड़ा। नोएडा में एंट्री करने वाली सभी सड़कों पर मजदूर प्रदर्शन पर उतर आए हैं। फिर चाहे बात मयूर विहार से नोएडा आने वाली सड़क की हो, दिल्ली के आश्रम से नोएडा के सेक्टर 16 और फिल्म सिटी की तरफ आने वाला डीएनडी सड़क हो या फिर सेक्टर 62 मेट्रो के नीचे मेरठ एक्सप्रेसवे से जोड़ने वाली सड़क... सभी जगह मजदूरों का प्रदर्शन तेज हो गया है। कुल मिलाकर प्रदर्शनकारियों ने दिल्ली से नोएडा और नोएडा से दिल्ली जाने वाले प्रमुख मार्गों को पूरी तरह बाधित कर दिया है। सेक्टर-15 फ्लाईओवर के नीचे बड़ी संख्या में मजदूर सड़क पर बैठ गए, जिससे यातायात ठप हो गया। वहीं, सेक्टर-62 स्थित फोर्टिस अस्पताल के पास भी विभिन्न कंपनियों के कर्मचारी धरने पर बैठ गए, जिससे स्थिति और गंभीर हो गई। जाम का असर मयूर विहार से लेकर डीएनडी और रजनीगंधा चौक तक देखने को मिला। गाजियाबाद के गोविंदपुरम से नोएडा के एंट्री गेट तक पहुंचने में लोगों को करीब दो घंटे का समय लग रहा है। स्कूल जाने वाले बच्चे, ऑफिस जाने वाले कर्मचारी और आम लोग सभी इस जाम से खासे परेशान नजर आए। कई लोगों को मजबूरी में पैदल ही सफर तय करना पड़ा। स्थिति को संभालने के लिए ट्रैफिक पुलिस ने कई रूट डायवर्जन लागू किए हैं। सेक्टर-59 मेट्रो स्टेशन के नीचे से यातायात को मोड़कर संचालन किया जा रहा है, लेकिन वैकल्पिक मार्गों पर भी भारी दबाव के चलते जाम की स्थिति बनी हुई है। मौके पर पुलिस और आम लोगों के बीच बहस के दृश्य भी सामने आए हैं। लोगों का आरोप है कि प्रशासन की ओर से पहले से कोई ठोस ट्रैफिक प्लान नहीं बनाया गया, जिसके कारण हालात और बिगड़ गए।

आर्यावर्त संवाददाता

नोएडा। दिल्ली से सटे नोएडा औद्योगिक क्षेत्र में मजदूरों का गुस्सा अब एक शहर तक सीमित नहीं, बल्कि पूरे दिल्ली-एनसीआर में फैला हुआ एक बड़े आंदोलन का रूप ले चुका है। वेतन वृद्धि, महंगाई और श्रम सुविधाओं को लेकर शुरू हुआ यह विरोध अब कई जिलों में असर दिखा रहा है। नोएडा में चल रहे इस आंदोलन की शुरुआत 7 अप्रैल को गुरुग्राम के मानेसर इलाके से हुई थी, जहां मजदूरों ने अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन शुरू किया था।

इसके बाद यह विरोध धीरे-धीरे नोएडा और फिर ग्रेटर नोएडा पहुंचा। अब इस आंदोलन का असर गाजियाबाद, बुलंदशहर और हापुड़ तक में भी दिखाई दे रहा है। आज बड़ी संख्या में बुलंदशहर और गाजियाबाद में श्रमिकों ने प्रदर्शन किया और सड़कों को जाम कर दिया। गाजियाबाद में स्थिति इतनी खराब हो गई कि नोएडा-गाजियाबाद बॉर्डर पर कई किलोमीटर लंबा जाम लग गया।

नोएडा में यह आंदोलन 9 अप्रैल को फेस-टू थाना क्षेत्र में मौजूद होजरी कंपलेक्स से शुरू हुआ। जहां गारमेंट और होजरी यूनिट्स में काम करने वाले मजदूर फैक्ट्रियों के बाहर इकट्ठा हुए। वो वेतन बढ़ाने की मांग को लेकर धरने पर बैठ गए। शुरुआत में यह प्रदर्शन पूरी तरह शांतिपूर्ण था। मजदूरों ने नारेबाजी और बातचीत के जरिए अपनी बात रखने की कोशिश की।

9 अप्रैल से लेकर 11 अप्रैल तक आंदोलन बिना किसी हिंसा के चलता रहा। हालांकि, मजदूरों का कहना था कि उनकी मांगों पर कंपनियों और प्रशासन की ओर से कोई ठोस जवाब नहीं दिया जा रहा, जिससे उनके बीच असंतोष लगातार बढ़ता गया। मजदूरों के आंदोलन की स्थिति ने 12 अप्रैल को बड़ा मोड़ लिया। ग्रेटर नोएडा के इकोटेक थर्ड इलाके में प्रदर्शन के दौरान मिंडा कंपनी के पास हालात अचानक बिगड़ गए। इस दौरान पुलिस कार्रवाई में गोली चलने की घटना सामने आई, जिसमें एक महिला मजदूर को गोली लग गई।

यह घटना पूरे आंदोलन के लिए टर्निंग प्वाइंट साबित हुई। जैसे ही गोलीकांड की खबर फैली, मजदूरों में भारी आक्रोश फैल गया और आंदोलन ने उग्र रूप ले लिया।

10 तारीख तक वेतन मिले

ओवरटाइम पर दोगुना भुगतान अनिवार्य किया जाए
प्रत्येक श्रमिक को साप्ताहिक अवकाश प्रदान किया जाए
अगर इस दिन काम किया जाता है तो दोगुना वेतन दें
सभी मजदूरों को नियमानुसार बोनस दिया जाएगा, जो कि अधिकतम 30 नवंबर से पहले उनके खातों में जमा किया जाए
यौन उत्पीड़न रोकथाम कमेटी सभी स्थलों पर गठित की जाए, इसकी अध्यक्षता महिलाओं द्वारा की जाए
हर जगह शिकायत पेटी की स्थापना की जाए
सभी के साथ सम्मानजनक व्यवहार किया जाए, ये सुनिश्चित की जाए

सड़क पर उतरे मजदूर

अगले ही दिन 13 अप्रैल यानी सोमवार की सुबह नोएडा के फेस-2, सेक्टर-62 और एनएच-9 जैसे प्रमुख इलाकों में हजारों मजदूर सड़कों पर उतर आए। इससे यातायात पूरी तरह ठप हो गया। प्रदर्शनकारियों ने सड़कें जाम कर दी। डिवाइडर पर चढ़कर नारेबाजी की। कई जगह वाहनों को रोक दिया। इस दौरान हालात तेजी से बिगड़े और कई जगह तोड़फोड़ और आगजनी की घटनाएं सामने आईं।

नोएडा के फेस-2 इलाके में कई वाहनों को नुकसान पहुंचाया गया। इससे पूरे इलाके में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। पुलिस और मजदूर आमने-सामने आ गए। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए पुलिस को आंसू गैस के गोले दागने पड़े। भारी पुलिस बल की तैनाती के बाद किसी तरह हालात को काबू में लाया गया, लेकिन तनाव अभी भी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है।

कई किलोमीटर लंबा जाम?

इस आंदोलन का सीधा असर नोएडा और ग्रेटर नोएडा के औद्योगिक ढांचे पर पड़ा। फेस-2 के होजरी कंपलेक्स में करीब 500 कंपनियां संचालित होती हैं। वहीं, इकोटेक थर्ड के औद्योगिक क्षेत्र में भी करीब 400 से अधिक फैक्ट्रियां और निजी कंपनियां हैं। इनमें सैकड़ों की संख्या में मजदूर काम करते हैं। दोनों प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों में उत्पादन प्रभावित हुआ और कई कंपनियों को अस्थायी रूप से काम बंद करना पड़ा।

बुलंदशहर और हापुड़ में भी सड़क पर मजदूर

यह आंदोलन किसी एक कंपनी के खिलाफ नहीं, बल्कि कई कंपनियों के मजदूरों का सामूहिक विरोध है। अब इसका असर पूरे एनसीआर में दिखने लगा है। गाजियाबाद, बुलंदशहर और हापुड़ जैसे जिलों में भी मजदूर सक्रिय हो गए हैं, जिससे आने वाले दिनों में आंदोलन और व्यापक होने की आशंका है।

क्या है मजदूरों की मांग?

मजदूरों की प्रमुख मांगों में न्यूनतम वेतन बढ़ाकर 26,000 रुपये प्रति माह करना, ओवरटाइम का भुगतान दोगुनी दर से करना, साप्ताहिक अवकाश सुनिश्चित करना, समय पर वेतन भुगतान, सैलरी स्लिप देना और बोनस को सीधे बैंक खाते में समय पर भेजना शामिल है। उनका कहना है कि महंगाई के इस दौर में मौजूदा वेतन से गुजारा संभव नहीं है।

प्रदर्शन के दौरान नोएडा-गाजियाबाद बॉर्डर पर कई किलोमीटर लंबा जाम लग गया, जिससे ट्रैफिक पुलिस को मोर्चा संभालना पड़ा। यात्रियों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ा और कई जगह एंबुलेंस फंसने की घटनाएं भी सामने आईं।

रूट डायवर्जन लागू

मजदूरों के उग्र प्रदर्शन का असर शहर की यातायात व्यवस्था पर भी साफ दिखाई दे रहा है। दिल्ली-नोएडा बॉर्डर, सेक्टर-62, फेस-2, एनएच-24, डीएनडी फ्लाईवे और चिल्ला बॉर्डर जैसे प्रमुख मार्गों पर लंबा जाम लग गया है। कई जगह वाहनों की कतारें कई किलोमीटर तक पहुंच गईं, जिससे ऑफिस जाने वाले लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा।

स्थिति को संभालने के लिए ट्रैफिक पुलिस ने कई जगह बैरिकेडिंग कर रूट डायवर्जन लागू कर दिया है। चिल्ला बॉर्डर से महामाया फ्लाईओवर होते हुए डीएनडी की ओर जाने वाले यातायात को डायवर्ट किया जा रहा है। सेक्टर-62 और एनएच-24 की ओर जाने वाले वाहनों को वैकल्पिक मार्गों से भेजा जा रहा है, जबकि नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे पर भी ट्रैफिक को नियंत्रित तरीके से चलाया जा रहा है।

दिल्ली से नोएडा आने-जाने वाले लोगों को डीएनडी फ्लाईवे और कालिंदी कुंज मार्ग का उपयोग करने की सलाह दी गई है। वहीं गाजियाबाद और इंदिरापुरम की ओर से आने वाले वाहनों को सेक्टर 71-75 के अंदरूनी रास्तों से डायवर्ट किया जा रहा है। नोएडा से ग्रेटर नोएडा जाने वालों को एक्सप्रेसवे का इस्तेमाल करने और दादरी रोड से बचने की सलाह दी गई है।

गौतमबुद्ध नगर के श्रमिकों के लिए DM नोएडा मेधा रूपम ने जारी किए निर्देश

सभी मजदूरों को वेतन पर्ची दी जाए

जिलास्तर पर एक कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है, श्रमिक अपनी किसी भी समस्या को बता सकते हैं, जिस पर तुरंत कार्रवाई की जाएगी।

डीएम ने जारी किए नंबर

श्रमिकों के व्यापक प्रदर्शन को देखते हुए डीएम मेधा रूपम ने पहले ही शिकायतों को दर्ज कराने के लिए नंबर जारी किए। उन्होंने कहा कि श्रमिकों की सुविधा के लिए कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है। श्रमिक वेतन संबंधी अन्य समस्याओं की शिकायत 120-2978231, 120-2978232, 120-2978862, 120-2978702 पर कर सकते हैं। डीएम ने भरोसा दिलाया है कि शिकायतों का त्वरित समाधान किया जाएगा।

इंटरस्टेट कोडीन सिरप रैकेट के दो सदस्य हुए गिरफ्तार

प्रयागराज। सोनभद्र में पिछले साल पकड़े गए कोडीन कफ सिरप मामले में सोनभद्र पुलिस ने रविवार रात अतरसुइया में छापा मारकर दवा कारोबारी बाप-बेटे को गिरफ्तार किया है। यह रैकेट बांग्लादेश बॉर्डर तक अवैध तरीके से कफ सिरप की सप्लाई करता था।

वैसे दोनों पिता-पुत्र 26 जनवरी को भी गिरफ्तार किए जा चुके थे। तब अतरसुइया पुलिस ने अपने थाने में दर्ज कोडीन कफ सिरप की अवैध खरीद-फरोख्त के मामले में ही पकड़ा था। हालांकि तब रिमांड अर्जी मंजूर न होने पर उन्हें जेल नहीं भेजा जा सका था। 25 दिसंबर को अतरसुइया थाने में उनके खिलाफ मुकदमा दर्ज हुआ था।

गिरफ्तार आरोपियों में विनोद कुमार वर्मा और उसके पुत्र संस्कार वर्मा के शामिल है, जो प्रयागराज में ओम साईं फार्मास्यूटिकल नाम से फर्म संचालित कर रहे थे। यह कार्रवाई 18 अक्तूबर 2025 को सोनभद्र के रॉबर्ट्सगंज क्षेत्र में पकड़े गए दो कंटेनर ट्रकों से जुड़ी है। इन ट्रकों से कुल 1,19,675 शीशियां कफ सिरप बरामद हुई थीं। जांच में सामने आया कि इनमें से 59,675 शीशियां प्रयागराज की इसी फर्म से जुड़ी थीं।

पुलिस के अनुसार पूछताछ में खुलासा हुआ कि आरोपी गाजियाबाद के मेरठ रोड स्थित डिपो के जरिए बड़े पैमाने पर कफ सिरप की सप्लाई करते थे। यह खेप बांग्लादेश सीमा (अगरतला, त्रिपुरा) तक भेजी जाती थी। जांच में यह भी सामने आया कि इस तस्करी नेटवर्क का कनेक्शन नई दिल्ली की वान्या इंटरप्राइजेज से था। कंपनी से कोडीनयुक्त कफ सिरप हासिल कर आरोपियों द्वारा उसे अन्य राज्यों में अवैध रूप से डायवर्ट किया जाता था।

तस्करी को छिपाने के लिए आरोपी कफ सिरप को नमकीन और चिप्स के बिल-पर्चों के जरिए कंटेनरों में छिपाकर भेजते थे, ताकि जांच एजेंसियों को शक न हो।

रेलवे लाइन पर मिली एमईएस ठेकेदार की लाश

आर्यावर्त संवाददाता

प्रयागराज। शिवकुटी थाना क्षेत्र में रविवार देर रात मिलिट्री इंजीनियरिंग सर्विस के ठेकेदार का शव रेलवे पटरी पर तीन टुकड़ों में कटा हुआ मिला। उनके भाइयों ने हत्या की आशंका जताई है। यह बात भी सामने आई है कि करीब तीन घंटे पहले वह घर से नाराज होकर निकले थे। पुलिस का कहना है कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट मिलने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार राजीव मिश्रा (48) मूल रूप से प्रयागराज के ही बहरिया थाना क्षेत्र के सिकंदरा गांव के निवासी थे, जबकि वर्तमान में शिवकुटी के लाला की सराय इलाके में रह रहे थे। वह एमईएस में ठेकेदारी का काम करते थे। परिजनों के अनुसार राजीव मिश्रा रविवार शाम घर से निकले थे, लेकिन इसके बाद उनका कोई पता नहीं चला। करीब तीन घंटे बाद देर रात उनकी लाश रेलवे ट्रैक पर मिली। शव की हालत बेहद क्षत-विक्षत थी, जिससे घटना को लेकर कई सवाल खड़े हो गए हैं। परिवार में उनकी पत्नी सविता मिश्रा है, जिनका मायका दारागंज में है। सविता उनकी दूसरी पत्नी हैं। पहली पत्नी की मौत वर्ष 2006 में हो गई थी, जिसके बाद उन्होंने 2009 में सविता से विवाह किया था। पहली पत्नी से उनके दो बेटे आकाश (23) और छोटू (19) हैं, जो वर्तमान में छत्तीसगढ़ के रायपुर में रहकर नौकरी कर रहे हैं।

परिवार में इस समय खुशियों का माहौल था। 20 अप्रैल को उनके बड़े बेटे के पुत्र का मुंडन संस्कार होना तय था। इस कार्यक्रम की तैयारियां चल रही थीं, लेकिन उससे पहले ही यह घटना हो गई।

घटना के बाद परिजनों ने हत्या कर शव को रेलवे ट्रैक पर फेंके जाने की आशंका जताई है। उन्होंने मृतक की पत्नी और उसके भाई पर शक जताया है।

शिवकुटी थाना प्रभारी वीरेंद्र सिंह यादव का कहना है कि परिजन हत्या कर शव फेंके जाने का आरोप लगा रहे हैं। फिलहाल शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। रिपोर्ट मिलने के बाद ही स्थिति स्पष्ट हो सकेगी और उसी आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए मामले की जांच की जा रही है।

दूध विक्रेता की नहर में गिरकर मौत

प्रयागराज। सोरांव थाना क्षेत्र के रैदेपुर गांव में एक दूध विक्रेता की नहर में बाइक गिरने से मौत हो गई। यह हादसा आज सुबह पिलखिन मंदिर के पीछे स्थित पुल के पास हुआ।

प्राप्त जानकारी के अनुसार रैदेपुर गांव निवासी राजेंद्र यादव (42) प्रतिदिन की तरह सुबह दूध दुहाने के लिए घर से निकले थे। जैसे ही उनकी बाइक पिलखिन मंदिर के पीछे बने पुल के पास पहुंची, वह अचानक अनियंत्रित होकर सीधे नहर में जा गिरी। इस दुर्घटना में राजेंद्र यादव गंभीर रूप से घायल हो गए और मौके पर ही उनकी मृत्यु हो गई।

हादसे के बाद वहां से गुजर रहे राहगीरों ने शोर मचाया। आसपास के लोग तुरंत मौके पर पहुंचे और स्थानीय लोगों की मदद से शव को नहर से बाहर निकाला गया। मृतक की पहचान होने के बाद परिजनों को घटना की सूचना दी गई।

परिजनों के अनुसार, राजेंद्र यादव अपने चार भाइयों में तीसरे

सेहरा पहने खड़े थे दो दूल्हे, दोनों से हुआ था रिश्ता तय, दुल्हन हो गई कन्फ्यूज... किससे करे शादी? फिर चुना ये रास्ता

आर्यावर्त संवाददाता

अमरोहा। उत्तर प्रदेश के अमरोहा से एक ऐसी अनोखी शादी का मामला सामने आया है, जिसे सुनकर लोग दांतों तले उंगली दबा रहे हैं। अमरोहा नगर के एक वैंक्वेट हॉल में उस वक्त अजीबोगरीब स्थिति पैदा हो गई, जब एक ही दुल्हन से निकाह करने के लिए दो अलग-अलग दूल्हे अपनी-अपनी बारात लेकर पहुंच गए। एक ही मंडप (निकाह स्थल) पर दो दूल्हों को देखकर बारातियों और लड़की पक्ष के बीच भारी हंगामा शुरू हो गया। मामला इतना बिगड़ा कि पुलिस को मोर्चा संभालना पड़ा।

वाकया अमरोहा कोतवाली इलाके के कैलसा बाईपास स्थित एक बैंक्वेट हॉल का है। रविवार को यहां निकाह की तैयारियां जोरों पर थीं। लड़की पक्ष बारात के स्वागत के लिए पलकें बिछाए खड़ा था। तभी अचानक एक के बाद एक दो बारातें दरवाजे पर आ पहुंचीं। दोनों दूल्हे शेरवानी पहने और सेहरा सजाए खुद को असली दूल्हा बता रहे थे। एक दुल्हन के लिए दो बारातें देख मेहमानों के बीच कानाफूसी और फिर जोरदार बहस शुरू हो गई।

पुलिस की तफ्तीश में जो हकीकत सामने आई, वह किसी फिल्मी स्क्रिप्ट से कम नहीं थी। दरअसल, लड़की का रिश्ता पहले मुरादाबाद के एक युवक से तय हुआ था। शादी की तारीख पक्की हो गई थी, कार्ड बंट चुके थे और दोनों परिवारों में तैयारियां अंतिम चरण में थीं। लेकिन, निकाह से कुछ समय पहले ही मुरादाबाद वाले पक्ष और दुल्हन पक्ष के बीच किसी बात को लेकर गहरी अनबन हो गई। दुल्हन पक्ष मुरादाबाद वाले दूल्हे से इतना नाराज हुआ कि उन्होंने निकाह न करने का फैसला ले लिया। लेकिन बदनामी के डर और तय तारीख पर ही निकाह करने की जिद में, लड़की वालों ने आनन-फानन में संभल के एक दूसरे युवक से रिश्ता तय कर दिया। चौंकाने वाली बात यह रही कि निकाह की तारीख वही रखी गई जो पहले वाले दूल्हे की थी।

दोबारा बारात और पुलिस का हस्तक्षेप

मुरादाबाद वाला दूल्हा अपनी पुरानी तय तारीख के अनुसार बारात लेकर पहुंच गया, तो वहीं संभल वाला दूल्हा भी अपने वादे के मुताबिक बारात के साथ हाजिर हो गया। जब वैंक्वेट हॉल में दो दूल्हों के बीच बवाल बढ़ा, तो लड़की पक्ष ने फौरन पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने तीनों पक्षों को बिठाकर बातचीत की। दुल्हन ने स्पष्ट कर दिया मैं संभल वाले दूल्हे के साथ ही निकाह करूंगी। लंबी जद्दोजहद के बाद पुलिस की मौजूदगी में संभल के दूल्हे के साथ निकाह की रस्में पूरी कराई गईं।

बिना दुल्हन लौटा मुरादाबाद वाला दूल्हा

निकाह संपन्न होने के बाद पुलिस थाने लौट गई। उधर, मुरादाबाद से आए दूल्हे और उसके बारातियों को काफी अपमानित महसूस करना पड़ा और उन्हें बिना दुल्हन के ही वापस लौटना पड़ा। हालांकि, इस मामले में किसी भी पक्ष की तरफ से कोई कानूनी कार्रवाई नहीं की गई है, लेकिन यह दो दूल्हों वाली बारात पूरे इलाके में चर्चा का विषय बनी हुई है।

मेरठ 'भूत बंगले' के वो 5 महीने... पोस्टमार्टम रिपोर्ट से नहीं सुलझी प्रियंका की मौत की गुत्थी, अब मोबाइल खोलेगा राज

आर्यावर्त संवाददाता

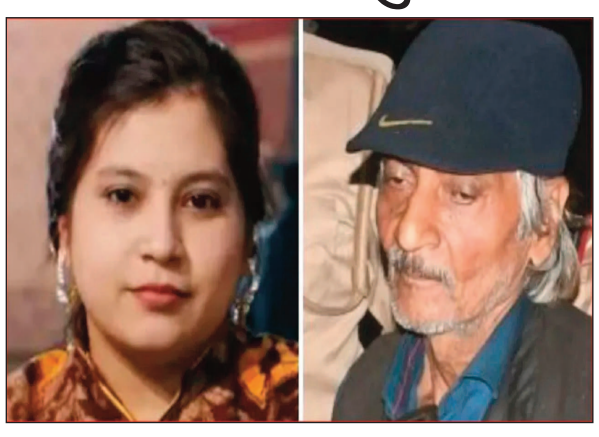

मेरठ। उत्तर प्रदेश के मेरठ में बेटी की लाश संग 5 महीने रहने वाले पिता के केस में अब एक और अड़चन सामने आई है। मृतका का शव सड़कर कंकाल बन चुका था, जिस कारण पोस्टमार्टम करने में काफी कठिनाई आई। उसकी रिपोर्ट साफ नहीं आ पाई है। जिस कारण अब मृतका के मोबाइल को खंगाला जाएगा, ताकि मौत की हकीकत पर से पर्दा उठ सके। दरअसल, सदर बाजार के तेली मोहल्ला में एक पिता अपनी जवान बेटी की लाश के साथ महीनों तक एक ही छत के नीचे रहा। दुर्गंध को दबाने के लिए वह परफ्यूम छिड़कता रहा और जब लाश कंकाल में बदलने लगी, तो उसे कमरे में बंद कर तीर्थ यात्रा पर निकल गया।

यह मामला जितना दर्दनाक है, इसकी गुत्थी सुलझाना पुलिस के लिए उतना ही चुनौतीपूर्ण साबित हो रहा है। शुक्रवार रात जब पुलिस ने तेली मोहल्ला स्थित घर का दरवाजा तोड़ा, तो अंदर का मंजर भयावह था। 20-22 साल की प्रियंका का शव पूरी तरह सड़ चुका था। मेडिकल कॉलेज के डॉक्टरों ने जब शव का पोस्टमार्टम किया, तो पाया कि प्रियंका के शरीर के 80 प्रतिशत से ज्यादा अंग नष्ट हो चुके थे। कंकाल के नाम पर केवल पैर का कुछ हिस्सा और हड्डियां ही शेष बची थीं।

डॉक्टरों ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि शव इतना पुराना और गल चुका है कि मृत्यु का सही समय और कारण पता लगाना अब चिकित्सा विज्ञान के लिए लगभग असंभव है। इस रिपोर्ट ने पुलिस के सामने एक बड़ी कानूनी दीवार खड़ी कर दी है।

प्रियंका का मोबाइल: आखिरी उम्मीद

अब जबकि मेडिकल रिपोर्ट ने हाथ खड़े कर दिए हैं, पुलिस की सारी उम्मीदें प्रियंका के मोबाइल फोन पर टिकी हैं। उदय भानु अपनी बेटी का फोन भी अपने साथ हरिद्वार ले गया था। पुलिस को संदेह है कि मोबाइल की कॉल डिटेल्स, मैसेज या किसी वीडियो रिकॉर्डिंग से यह पता चल सकता है कि मौत के आखिरी घंटों में प्रियंका के साथ क्या हुआ था। एसएसपी अविनाश पांडेय के निर्देश पर मेरठ पुलिस की एक टीम उदय भानु को साथ लेकर हरिद्वार रवाना हुई है, ताकि उस धर्मशाला से मोबाइल बरामद किया जा सके जहाँ वह रुका था। मोबाइल मिलने के बाद उसे फॉरेंसिक लैब (FSL) भेजा जाएगा।

लाश के साथ पिता की रहस्यमयी जिंदगी

मृतका का पिता उदय भानु, जिसकी मानसिक स्थिति सामान्य नहीं बताई जा रही है, बेटी की मौत के बाद भी महीनों तक उसी घर में रहा। जब लाश सड़ने लगी और बदबू पड़ोसियों तक पहुँचने का डर हुआ, तो वह लगातार घर में परफ्यूम का इस्तेमाल करता रहा। दिसंबर के महीने में वह मकान में ताला लगाकर हरिद्वार और देहरादून चला गया। हैरानी की बात यह है कि वह वहां के धर्मशालाओं में रुका और पंडितों से गुपचुप तरीके से अंतिम संस्कार की विधि पूछता रहा। तीन दिन पहले जब कुछ रिश्तेदारों ने उसे बेगम बाग इलाके में देखा और प्रियंका के बारे में कड़ाई से पूछा, तब जाकर इस खौफनाक राज का पर्दाफाश हुआ।

मनोचिकित्सक करेंगे पिता की काउंसलिंग

उदय भानु के बयान बार-बार बदल रहे हैं। कभी वह बेटी की बीमारी की बात करता है, तो कभी चुप्पी साध लेता है। पुलिस अब एक पैनल ऑफ सायकायट्रिस्ट (मनोचिकित्सकों की टीम) से उदय भानु की काउंसलिंग कराएगी। पुलिस यह जानना चाहती है कि क्या यह केवल मानसिक बीमारी का मामला है या फिर इस ख़ामोशी के पीछे कोई सोची-समझी वारदात छिपी है।

पड़ोसियों और रिश्तेदारों से भी पूछताछ की जा रही है कि पिछले 5 महीनों के दौरान उदय भानु का व्यवहार कैसा था और क्या किसी ने प्रियंका की चीखें सुनी थीं। फिलहाल, पुलिस कानूनी विशेषज्ञों से राय ले रही है कि बिना पोस्टमार्टम रिपोर्ट के इस मामले में ठोस चार्जशीट कैसे दाखिल की जाए।

लोक सेवा आयोग के बाहर प्रतियोगी छात्रों ने किया प्रदर्शन

आर्यावर्त संवाददाता

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की तकनीकी भर्तियों में परिणाम जारी करने में हो रही लगातार देरी को लेकर अभ्यर्थियों का आक्रोश सोमवार को फूट पड़ा। सैकड़ों की संख्या में छात्र आयोग के मुख्य द्वार पर पहुंच गए। इस दौरान सम्मिलित राज्य अभियंत्रण सेवा परीक्षा-2024 और राज्य कृषि अभियंत्रण सेवा परीक्षा-2024 के परिणाम जारी करने की मांग को लेकर प्रदर्शन शुरू कर दिया। छात्रों की मांग है कि आयोग लंबित न्यायिक प्रक्रिया का शीघ्र निस्तारण कराकर मुख्य परीक्षा का परिणाम जल्द घोषित करे। आयोग ने दिसंबर 2024 में सम्मिलित राज्य अभियंत्रण सेवा परीक्षा-2024 के तहत 604 सहायक अभियंता पदों के लिए विज्ञापन जारी किया था। प्रारंभिक परीक्षा 20 अप्रैल 2025 को आयोजित की और मई 2025 में उसका परिणाम घोषित किया। हालांकि इसके बाद भर्ती प्रक्रिया माइग्रेशन नियम को लेकर कानूनी विवाद में फंस गई। प्रारंभिक परीक्षा में असफल कुछ अभ्यर्थियों ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में में याचिका दाखिल कर यह आरोप लगाया कि विज्ञापन में वर्णित माइग्रेशन नीति का सही पालन नहीं किया गया। बताया गया कि इस पर एकल पीठ ने प्रारंभिक परिणाम संशोधित करने का निर्देश दिया था। अभ्यर्थियों ने कहा कि न्यायालय के आदेश के बाद मुख्य परीक्षा तो समय पर संपन्न हो गई लेकिन सात महीने बीत जाने के बाद भी परिणाम जारी नहीं हो सका है। उनका आरोप है कि आयोग की ओर से अदालत में प्रभावी पैरवी नहीं की जा रही है। इसी तरह सम्मिलित राज्य कृषि अभियंत्रण सेवा परीक्षा-2024 भी इसी माइग्रेशन विवाद के कारण कोर्ट में लंबित है। इस भर्ती की मुख्य परीक्षा मार्च 2025 में आयोजित हुई थी।

“दम मारो दम” की धुन थमी, सुरों की रानी हो गईं खामोश

सिंगिंग के अलावा कुकिंग और सफल रेस्तरां बिजनेस

आशा भोसले केवल एक महान गायिका ही नहीं, बल्कि एक शानदार कुक भी थीं। वह अक्सर कहती थीं कि अगर वह सिंगर न होतीं, तो एक रसोइया होतीं। उनके हाथ के बने 'कढ़ाई गोश्त' और 'बिरयानी' के मुरीद राज कपूर से लेकर ऋषि कपूर तक रहे। अपने इसी शौक को उन्होंने बिजनेस में बदला। उन्होंने 'Asha's' नाम से रेस्तरां की एक ग्लोबल चैन शुरू की। उनका पहला रेस्तरां दुबई में खुला, जिसके बाद कुवैत, बर्मिंघम, मैनचेस्टर और अबू धाबी जैसे शहरों में भी इसे विस्तार मिला। वह अपने रेस्तरां के शेफ्स को खुद ट्रेनिंग देती थीं।

ब्रिटिश बैंड के साथ गाया आखिरी गाना

आशा भोसले की आवाज सिर्फ बॉलीवुड तक सीमित नहीं थी, बल्कि इंटरनेशनल म्यूजिक वर्ल्ड में भी उनका उतना ही सम्मान था। मार्च 2026 में रिलीज हुई मशहूर ब्रिटिश वर्चुअल बैंड ‘गोरिल्लाज’ की नौवीं एल्बम ‘द माउंटेन’ (पर्वत) में उनका गाना शामिल है। ₹द शैडोई लाइट₹ नाम के इस ट्रैक को अब उनके शानदार करियर के आखिरी अध्याय के रूप में देखा जा रहा है। इसमें उन्होंने ब्रिटिश आर्टिस्ट ग्रफ राइस और सरोद उस्ताद अमान-अयान अली बंगश के साथ काम किया था। गोरिल्लाज बैंड बनाने वाले डेमन अलबर्न असल में 70 के दशक के बॉलीवुड संगीत और आरडी बर्मन के बहुत बड़े फैन हैं। उन्होंने कई इंटरव्यू में आशा भोसले की आवाज को 'साइकडेलिक' और 'एक्सपेरिमेंटल' बताया था। यही वजह थी कि उन्होंने अपनी इस नई एल्बम को भारत में रिकॉर्ड किया। इस एल्बम में आशा ताई के अलावा अनुष्का शंकर ने भी साथ काम किया है। वहीं आशा अपने अंतिम वर्षों में म्यूजिक रियलिटी शोज में जज के रूप में और लाइव कॉन्सर्ट्स में सक्रिय रहीं। 2023 में भी उन्होंने अपने 90वें जन्मदिन पर दुबई में परफॉर्म किया था।

भारतीय संगीत जगत की अमर आवाज़ आशा भोसले अब हमारे बीच नहीं रहीं। उनके गीतों ने न केवल फिल्मों को जीवन दिया, बल्कि करोड़ों दिलों की धड़कनों को स्वर दिया। उनकी आवाज़ में मिठास, चंचलता और गहराई का अद्भुत संगम था, जो हर पीढ़ी को जोड़ता रहा। 60-70 के दशक से लेकर आधुनिक दौर तक उन्होंने हर शैली में अपनी पहचान बनाई। उनका जाना केवल एक कलाकार का जाना नहीं, बल्कि एक युग का अंत है। हालांकि उनकी आवाज़ हमेशा गीतों में गूंजती रहेगी और वे सदा अमर रहेंगी।

भारतीय संगीत जगत में कुछ आवाज़ें ऐसी होती हैं जो समय की सीमाओं से परे चली जाती हैं। वे केवल गीत नहीं गातीं, बल्कि भावनाओं को जीवन देती हैं। ऐसी ही एक अमर आवाज़ थीं आशा भोसले। आज जब यह खबर सामने आई कि वे अब इस दुनिया में नहीं रहीं, तो मानो पूरे देश के दिल की धड़कन कुछ पल के लिए थम गई। यह केवल एक कलाकार का जाना नहीं, बल्कि एक युग का अंत है।

एक साधारण शुरुआत, असाधारण सफर

8 सितंबर 1933 को जन्मीं आशा भोसले ने अपने जीवन की शुरुआत बेहद साधारण परिस्थितियों में की थी। उनके पिता दीनानाथ मंगेशकर एक प्रसिद्ध गायक और नाट्य कलाकार थे, लेकिन उनके निधन के बाद परिवार पर कठिनाइयों का पहाड़ टूट पड़ा। कम उम्र में ही आशा जी ने परिवार की जिम्मेदारी उठाई और संगीत को अपना सहारा बनाया।

उनकी आवाज़ में वह मिठास थी जो सीधे दिल तक पहुँचती थी। शुरुआती दिनों में उन्हें छोटे-मोटे गाने मिले, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। धीरे-धीरे उनकी मेहनत रंग लाई और वे फिल्म इंडस्ट्री में अपनी अलग पहचान बनाने लगीं।

हर अंदाज़ में महारत

आशा भोसले की सबसे बड़ी खासियत यह थी कि वे हर तरह के गीत गा सकती थीं। चाहे वह रोमांटिक गीत हो, ग़ज़ल हो, भजन हो या फिर पॉप और कैबरे—हर शैली में उन्होंने अपनी छाप छोड़ी। उनके गाए गीत जैसे ‘पिया तू अब तो आजा₹, ‘दम मारो दम’, ₹इन आंखों की मस्ती₹ और ₹चुरा लिया है तुमने₹ आज भी लोगों की जुबान पर हैं। उनकी आवाज़ में एक अलग तरह की जीवंतता थी, जो हर पीढ़ी को जोड़ती थी।

संगीतकारों की पसंदीदा आवाज़

आर.डी. बर्मन के साथ उनकी जोड़ी ने भारतीय संगीत को नई ऊँचाइयाँ दीं। दोनों के बीच का तालमेल इतना शानदार था कि हर गीत एक मास्टरपीस बन जाता था। ₹दम मारो दम₹ और ₹महबूबा महबूबा₹ जैसे गीत आज भी उनकी साझेदारी की मिसाल हैं।

आशा जी ने ओ.पी. नैय्यर, खैय्याम, और ए.आर. रहमान जैसे महान संगीतकारों के साथ भी काम किया और हर बार अपने अंदाज़ से लोगों को चौंका दिया।

अंतरराष्ट्रीय पहचान

आशा भोसले केवल भारत तक सीमित नहीं रहीं। उनकी आवाज़ ने दुनिया भर में लोगों का दिल जीता। उन्होंने अंग्रेज़ी, रूसी, अरबी और कई अन्य भाषाओं में भी गाने गाए। उन्हें ग्रैमी अवॉर्ड के लिए भी नामांकित किया गया, जो उनकी वैश्विक लोकप्रियता का प्रमाण है।

जीवन के उतार-चढ़ाव

उनका व्यक्तिगत जीवन भी संघर्षों से भरा रहा। कम उम्र में शादी, फिर अलगाव, और बच्चों की जिम्मेदारी—इन सबके बीच उन्होंने कभी अपने करियर को नहीं छोड़ा। उन्होंने हर मुश्किल का सामना मुस्कान के साथ किया और आगे बढ़ती रहीं।

एक प्रेरणा, एक विरासत

आशा भोसले केवल एक गायिका नहीं थीं, वे एक प्रेरणा थीं। उन्होंने यह साबित किया कि अगर आपके अंदर जुनून और मेहनत है, तो कोई भी बाधा आपको रोक नहीं सकती। उनकी आवाज़ आने वाली पीढ़ियों के लिए हमेशा प्रेरणा बनी रहेगी। संगीत के हर छात्र, हर कलाकार के लिए वे एक आदर्श हैं।

अलविदा नहीं, फिर मिलेंगे

आज जब हम उन्हें याद करते हैं, तो यह कहना मुश्किल है कि वे अब हमारे बीच नहीं हैं। उनकी आवाज़ हर जगह है—रेडियो पर, टीवी पर, हमारे दिलों में। आशा भोसले का जाना एक बहुत बड़ी क्षति है, लेकिन उनकी विरासत हमेशा जीवित रहेगी। वे भले ही इस दुनिया से चली गई हों, लेकिन उनका संगीत हमेशा अमर रहेगा।

जब भी कोई मधुर गीत बजता है, जब भी कोई दिल से गुनगुनाता है, वहाँ कहीं न कहीं आशा भोसले की झलक मिलती है। वे केवल एक नाम नहीं, बल्कि एक एहसास हैं—एक ऐसी आवाज़ जो कभी खामोश नहीं होगी।

आनंद भोसले मां के करियर को संभालते थे

आशा भोसले और गणपत राव के तीन बच्चे थे। उनके बड़े बेटे हेमंत भोसले ने शुरुआत में पायलट के तौर पर काम किया, लेकिन बाद में संगीत की दुनिया में कदम रखा। उन्होंने कुछ यादगार गाने भी दिए, हालांकि उनका सिंगिंग करियर लंबा नहीं चला। 2015 में कैंसर के कारण उनका निधन हो गया। आशा की बेटी वर्षा भोसले, एक जानी-मानी कॉलमनिस्ट थीं। उन्होंने पति से तलाक के बाद 55 साल की उम्र में गोली मारकर आत्महत्या कर ली थी। उनके सबसे छोटे बेटे आनंद भोसले ने बिजनेस और फिल्म निर्देशन की पढ़ाई की और वे ही अपनी मां के करियर को संभालते थे।

बहन के साथ चोरी-छिपे स्कूल जाती थीं आशा भोसले

आशा भोसले के पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर, रंगमंच कलाकार थे। घर में तंगहाली का वो आलम था कि बड़ी बहन लता मंगेशकर का जब स्कूल में दाखिला करवाया गया, तो वो आशा को चोरी-छिपे स्कूल ले जाने लगीं। मास्टर से छिपकर वो आशा को साथ बैठा लेती थीं।स्कूल जाते हुए महज दो दिन ही हुए थे कि मास्टरजी ने चोरी पकड़ ली। उन्होंने दोनों को क्लासरूम से बाहर कर दिया और कहा कि एक फीस में एक ही बच्चा स्कूल आ सकता है। दोनों घर लौट गए। अगले दिन लता ने फैसला किया कि वो छोटी बहन को पढ़ाएंगी। उन्होंने पिता से बात कर स्कूल से अपना नाम कटवा दिया और अपनी जगह बहन आशा का एडमिशन करवाया। आशा महज 9 साल की थीं, जब उनके पिता का निधन हो गया। ऐसे में लता ने ही संघर्ष कर हिंदी सिनेमा में कदम रखा और बहन की परवरिश की। मंगेशकर परिवार पहले पुणे और फिर मुंबई आकर बसा। यहां महज 10 साल की उम्र में आशा ने गाना शुरू कर दिया। उन्हें पहला ब्रेक मराठी फिल्म माझा बल (1943) के गाने चला चला नाव बला से मिला।

16 की उम्र में भागकर शादी की, बहन से रिश्ते बिगड़े

आशा भोसले को महज 16 साल की उम्र में बड़ी बहन लता के सेक्रेटरी गणपत राव भोसले से प्यार हो गया। गणपत राव उम्र में 15 साल बड़े थे। आशा जानती थीं कि परिवार इस रिश्ते को नहीं अपनाएगा, तो उन्होंने 16 की उम्र में घर से भागकर गणपत राव से शादी कर ली। यह फैसला उनके लिए खुशियों से ज्यादा तकलीफें लेकर आया। शादी के बाद उन्हें अपने पति और ससुराल वालों से अच्छा व्यवहार नहीं मिला। वक्त बीतता गया और रिश्ते में कड़वाहट भी बढ़ती गई। शक और तनाव से भरे इस रिश्ते ने कुछ साल बाद ही दम तोड़ दिया। गणपतराव ने उन्हें घर से निकाल दिया। उस वक्त आशा दो बच्चों के साथ थीं और तीसरे बच्चे की मां बनने वाली थीं। मजबूरी में उन्हें अपने मायके लौटना पड़ा। साल 1960 में दोनों अलग हो गए।

आरडी बर्मन की मां ने कहा था, आशा से शादी करनी है, तो लाश से होकर गुजरना होगा

गणपत राव से तलाक लेने के बाद आशा भोसले की जिंदगी में आरडी बर्मन हमसफर बनकर आए। दोनों की मुलाकात 1966 में हुई, जब वो तीसरी मंजिल में साथ काम कर रहे थे। दोनों ने ओ हसीना जुल्फों वाली..., और ओ मेरे सोना रे सोना रे को आवाज दी। आरडी बर्मन, पिता एसडी बर्मन की लेगेसी से कुछ अलग करना चाहते थे। जैज, कैबरे का ट्रेंड लाते हुए उन्हें आशा भोसले की आवाज का सहारा मिला। दोनों ने पिया तू अब तो आजा..., दम मारो दम.... जैसे गानों बनाए, जिसे आशा भोसले को कैबरे क्वीन कहा जाने लगा। प्रोफेशनल रिश्ता जल्द ही नजदीकियां बढ़ने की वजह बना। पंचम दा, उम्र में आशा से 6 साल छोटे थे। उनका 1971 में पहली पत्नी रीटा से तलाक हो चुका था। उनकी शादी विवादों में थी। घरेलू झगड़े बढ़ने से वो घर छोड़कर होटल में रहने लगे थे। 9 साल बाद जब उन्होंने आशा से शादी करने का फैसला किया तो परिवार खिलाफ हो गया। मां ने साफ इनकार कर दिया। आरडी बर्मन की मां दोनों के रिश्ते से इतनी खफा थीं कि उन्होंने साफ कह दिया कि जब तक वो जिंदा हैं, तब तक दोनों की शादी नहीं हो सकती और अगर वो ये शादी करना चाहते हैं तो आशा को अपनी मां की लाश के ऊपर से घर में लाना होगा। ये सुनकर आरडी बर्मन बिना कुछ कहे ही वहां से चले गए। वे शादी करना चाहते थे, लेकिन मां की नाराजगी के चलते ऐसा मुमकिन नहीं था। कुछ सालों के बाद आरडी बर्मन की मां बेहद बीमार रहने लगीं और उन्होंने किसी को भी पहचाना बंद कर दिया। इसके बाद आरडी बर्मन और आशा ने 1980 में शादी कर ली। शादी के 14 साल बाद 1994 में आरडी बर्मन का निधन हो गया। आशा एक बार फिर अकेली हो गईं। आरडी के निधन से पहले उनकी फाइनेंशिल कंडीशन ठीक नहीं थी जिसके चलते आशा और वे अलग रहा करते थे।

सालों बाद किशोर कुमार ने अपने और आशा के अपमान का बदला लिया

1957 तक आशा भोसले हिंदी सिनेमा में पहचान बना चुकी थीं। उनके गाने उड़ें जब-जब जुल्फें तेरी काफी हिट रहा था। किशोर कुमार भी अपनी पहचान बना चुके थे। कामयाबी मिलने के बाद एक रोज उन्हें फिर उसी स्टूडियो में रिकॉर्ड करने का मौका मिला। वहां रॉबिन चटर्जी भी मौजूद थे, जिन्होंने सालों पहले उन्हें और आशा को स्टूडियो से निकलवाया था। आशा ताई तो झिझक में कुछ कह नहीं सकीं, लेकिन किशोर कुमार ने मौके का फायदा उठाया और रिकॉर्डिस्ट से कहा- क्यों, आपने तो कहा था कि हम गा नहीं सकते। आप देख लीजिए कि अब हम कहां हैं।

सीनियर सिटीजन की हुई मौज, इस स्कीम में मिल रहा 9.2त्न का छप्परफाड़ ब्याज

आज के समय में लगातार बढ़ती महंगाई के बीच हर इंसान यही चाहता है कि उसकी गाढ़ी कमाई सुरक्षित भी रहे और उस पर तगड़ा मुनाफा भी मिले। खासकर जब बात सीनियर सिटीजन की आती है, तो निवेश का फैसला और भी सोच-समझकर लेना पड़ता है। ऐसे में फिक्स्ड डिपॉजिट (स्नष्ठ) को हमेशा से ही एक बेहद भरोसेमंद और सुरक्षित विकल्प माना गया है। अब बुजुर्गों के लिए एक बहुत बड़ी खुशखबरी सामने आई है, जहां उन्हें अपने निवेश पर पहले से कहीं ज्यादा और आकर्षक ब्याज दर मिलने जा रही है।

सीनियर सिटीजन के लिए जबरदस्त है ऑफर

हाल ही में एक वित्तीय कंपनी ने अपनी एफडी स्कीम पर ब्याज दरों में शानदार बढ़ोतरी कर दी है। एक तरफ जहां आमतौर पर बैंक सीनियर सिटीजन को केवल 7 से 7.5 प्रतिशत तक का ही रिटर्न देते हैं, वहीं यह नई पेशकश 9.2 प्रतिशत तक का सालाना ब्याज देने का दावा कर रही है। इसका सीधा मतलब यह है कि अगर कोई बुजुर्ग अपनी जीवन भर की बचत को इस स्कीम में लगाता है, तो उसे पारंपरिक बैंक एफडी की तुलना में जबरदस्त फायदा मिलने वाला है। इस योजना के तहत वरिष्ठ नागरिकों के लिए ब्याज दरें 8.38 प्रतिशत से शुरू होकर अधिकतम 9.2 प्रतिशत तक जाती हैं। यह ब्याज दर इस बात पर निर्भर करती है कि पैसा कितने समय के लिए जमा किया गया है। यानी निवेश की अवधि जितनी लंबी होगी, आपका रिटर्न भी उतना ही शानदार होने की संभावना है।

आम निवेशकों के लिए भी मुनाफे का सौदा

अगर आप सीनियर सिटीजन की श्रेणी में नहीं आते हैं, तब भी आपको निराश होने की बिल्कुल जरूरत नहीं है। आम निवेशकों के लिए भी यह योजना किसी शानदार मौके से कम नहीं है। इसमें आम लोगों को 7.88 प्रतिशत से लेकर 8.75 प्रतिशत तक का तगड़ा ब्याज ऑफर किया जा रहा है, जो मौजूदा समय में कई प्रमुख बैंकों की दरों से काफी बेहतर माना जा रहा है। इसी शानदार रिटर्न की वजह से यह योजना अब हर आयु वर्ग के निवेशकों को अपनी तरफ खींच रही है। इस एफडी में निवेश के लिए काफी लचीलापन भी दिया गया है। आप अपनी आर्थिक जरूरत के हिसाब से 1 साल से लेकर 5 साल तक की अवधि के लिए अपना पैसा इसमें सुरक्षित कर सकते हैं। आवेदन की प्रक्रिया को भी बहुत आसान रखा गया है। इच्छुक लोग घर बैठे ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं या फिर अपनी नजदीकी शाखा में जाकर इस योजना का लाभ उठा सकते हैं।

पैसे लगाने से पहले इन नियमों को जान लेना है जरूरी

ऑफर भले ही कितना भी आकर्षक हो, लेकिन निवेश करने से पहले कुछ अहम बातों का ध्यान रखना बेहद आवश्यक है। आपको बता दें कि अगर आपकी एफडी से सालाना मिलने वाला ब्याज 50,000 रुपये की सीमा को पार कर जाता है, तो उस पर टीडीएस (ज्जष्ठस्) काटा जा सकता है। हालांकि, इस स्थिति में आप फॉर्म 15॥ जमा करके टैक्स कटौती से बच सकते हैं, बशर्ते आप इसके लिए पात्र हों। इसके अलावा, यदि आपको मैच्योरिटी से पहले अचानक पैसों की सख्त जरूरत पड़ती है और आप बीच में ही अपनी एफडी तुड़वाते हैं, तो उस पर कुछ पेनल्टी भी लगाई जा सकती है। इसलिए अपनी मेहनत की कमाई निवेश करने से पहले सभी नियमों और शर्तों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। फाइनेंशियल एक्सपर्ट्स भी हमेशा यही सलाह देते हैं कि अपने सारे पैसे एक ही जगह लगाने के बजाय अलग-अलग विकल्पों में बांटकर निवेश करना चाहिए, जिससे जोखिम कम होता है और रिटर्न भी संतुलित रहता है। सही जानकारी और समझदारी के साथ उठाया गया यह कदम आपके ७भविष्य को आर्थिक रूप से काफी मजबूत बना सकता है।

4.05 लाख कनेक्शन पीएनजी के, एलपीजी नहीं, पेट्रोलियम मंत्रालय की सफाई

पेट्रोलियम मंत्रालय ने शुक्रवार को स्पष्ट किया कि हालिया प्रेस ब्रीफिंग में अनजाने में यह कहा गया था कि पिछले पांच हफ्तों में 4.05 लाख नए एलपीजी कनेक्शन गैसिफाई किए गए हैं, जबकि यह आंकड़ा पाइप्ड नेचुरल गैस (पीएनजी) कनेक्शनों से संबंधित है।

मंत्रालय ने कहा, यह स्पष्ट किया जाता है कि यह संख्या एलपीजी नहीं, बल्कि पीएनजी कनेक्शनों की है। इस त्रुटि के लिए खेद है।

मंत्रालय के अनुसार, अब तक 4.05 लाख पीएनजी कनेक्शन सक्रिय किए जा चुके हैं, जबकि करीब 4.41 लाख नए उपभोक्ताओं ने कनेक्शन के लिए पंजीकरण भी कराया है।

इस बीच, वैश्विक राजनीतिक परिस्थितियों के बावजूद घरेलू एलपीजी सिलेंडर की आपूर्ति सामान्य बनी हुई है और किसी भी डिस्ट्रीब्यूटर पर कमी (ड्राई-आउट) की स्थिति नहीं है।

सरकार ने उपभोक्ताओं को पीएनजी और इलेक्ट्रिक कुकटॉप जैसे वैकल्पिक ईंधनों के उपयोग के लिए प्रोत्साहित किया है और मौजूदा परिस्थितियों में ऊर्जा बचत की अपील की है।

मंत्रालय ने लोगों से पेट्रोल, डीजल और एलपीजी की घबराहट में खरीदारी से बचने और केवल आधिकारिक स्रोतों पर भरोसा करने की सलाह दी है। एलपीजी उपभोक्ताओं से डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए बुकिंग करने और डिस्ट्रीब्यूटर के पास जाने से बचने का अनुरोध किया गया है।

ऑनलाइन एलपीजी बुकिंग अब करीब 98 प्रतिशत तक पहुंच गई है, जबकि डिलीवरी ऑथेंटिकेशन कोड आधारित डिलीवरी लगभग 92 प्रतिशत हो गई है, जिससे वितरण स्तर पर गड़बड़ी रोकने में मदद मिल रही है।

सरकार ने बताया कि अस्पतालों और शैक्षणिक संस्थानों के लिए एलपीजी और पीएनजी की आपूर्ति को प्राथमिकता दी जा रही है।

कालाबाजारी और जमाखोरी रोकने के लिए देशभर में कार्रवाई जारी है। गुरुवार को 3800 से अधिक छापेमारी में करीब 450 सिलेंडर जब्त किए गए। अब तक कुल 1.2 लाख छापे मारे गए हैं, 57,000 से ज्यादा सिलेंडर जब्त किए गए हैं, 950 से अधिक एफआईआर दर्ज हुई हैं और 229 लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

सार्वजनिक क्षेत्र की तेल कंपनियों ने भी निगरानी बढ़ाते हुए 2100 से अधिक कारण बताओ नोटिस जारी किए हैं, 204 एलपीजी डिस्ट्रीब्यूटर पर जुर्माना लगाया गया है और 53 की डिस्ट्रीब्यूशन लाइसेंस निलंबित किए गए हैं।

इसके अलावा, 18,000 से अधिक पीएनजी उपभोक्ताओं ने वेबसाइट के जरिए अपने एलपीजी कनेक्शन सरेंडर किए हैं।

मंत्रालय ने कहा कि देश की सभी रिफाइनरियां उच्च क्षमता पर काम कर रही हैं और कच्चे तेल का पर्याप्त भंडार उपलब्ध है। पेट्रोल और डीजल का भी पर्याप्त स्टॉक बना हुआ है, जबकि घरेलू खपत को पूरा करने के लिए एलपीजी उत्पादन बढ़ाया गया है।

भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 9 .063 अरब डॉलर बढ़कर 697 .121 अरब डॉलर रहा

भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 3 अप्रैल को समाप्त हुए सप्ताह में 9.063 अरब डॉलर बढ़कर 697.121 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। यह जानकारी शुक्रवार को भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा जारी किए गए डेटा में दी गई। इससे पहले के हफ्ते में विदेशी मुद्रा भंडार में 10.288 अरब डॉलर की गिरावट देखी गई थी। इसकी वजह एफसीए की वैल्यू में गिरावट आना था। आरबीआई के डेटा के मुताबिक, 3 अप्रैल को समाप्त हुए हफ्ते में विदेशी मुद्रा भंडार के अहम घटक गोल्ड रिजर्व की वैल्यू 7.221 अरब डॉलर बढ़कर 120.742 अरब डॉलर हो गई है।

विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक फॉरेन करेंसी एसेट्स (एफसीए) की वैल्यू 1.784 अरब डॉलर बढ़कर 552.856 अरब डॉलर हो गई। एफसीए में डॉलर के साथ दुनिया की कई अहम मुद्राएं जैसे येन, यूरो और पाउंड होते हैं, जिनकी वैल्यू को डॉलर में दिखाया जाता है। आरबीआई के अनुसार, 3 अप्रैल को समाप्त हुए हफ्ते में एसडीआर की वैल्यू 5.8 करोड़ डॉलर बढ़कर 18.707 अरब डॉलर हो गई है। वहीं, भारत की आईएमएफ (अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष) में रिजर्व पॉजिशन में कोई बदलाव नहीं हुआ है और यह 4.816 अरब डॉलर पर यथावत रही है।

किसी भी देश के लिए उसका विदेशी मुद्रा भंडार काफी महत्वपूर्ण होता है, और इससे उस देश की आर्थिक स्थिति का पता लगता है। इससे अलावा, यह मुद्रा की विनिमय दर को स्थिर रखने में बड़ी भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिए अगर किसी स्थिति में डॉलर के मुकाबले रुपए पर अधिक दबाव देखने को मिलता है और उसकी वैल्यू कम होती है तो केंद्रीय बैंक विदेशी मुद्रा भंडार का इस्तेमाल कर डॉलर के मुकाबले रुपए को गिरने से रोक सकता है और विनिमय दर को स्थिर रखता है।

नागरिकता पर दुनिया में सबसे कड़ा नियम बनाने की राह पर ब्रिटेन

लंदन, एजेंसी। टिश सरकार प्रवासियों के लिए स्थायी निवास (आईएलआर) प्राप्त करने की प्रक्रिया को काफी कठिन बनाने की योजना बना रही है। यदि प्रस्तावित परिवर्तन लागू होते हैं, तो ब्रिटेन उच्च-आय वाले अधिकांश देशों की तुलना में अधिक प्रतिबंधात्मक हो जाएगा, और विशेष रूप से शरणार्थियों के लिए, यह एक ऐसी स्थिति पैदा कर सकता है जिसका समान देशों में कोई उदाहरण नहीं मिलता।

ब्रिटेन की गृह सचिव, शबाना महमूद, का इरादा अधिकांश प्रवासियों के लिए स्थायी निवास प्राप्त करने की आवश्यक अवधि को पांच साल से बढ़ाकर दस साल करने का है। कुछ मामलों में, यह अवधि 20 साल तक जा सकती है। यह परिवर्तन उन लोगों को विशेष रूप से प्रभावित करेगा जिनके पूर्णकालिक रोजगार में होने की संभावना कम है, जिनमें वर्क वीजा धारकों के आश्रित, पारिवारिक वीजा धारक और शरणार्थी शामिल हैं। नई प्रस्तावित पात्रता आवश्यकताओं में एक साफ आपराधिक रिकॉर्ड (पहले के 12 महीने की सजा की सीमा को हटाकर), अंग्रेजी भाषा का उच्च मानक, और प्रति वर्ष 12,570 पाउंड से अधिक की आय कम से कम तीन साल तक बनाए रखना शामिल है। दस साल की आधारभूत अवधि को व्यक्तिगत परिस्थितियों के आधार पर ऊपर या नीचे समायोजित किया जाएगा। उदाहरण के लिए, उच्च-कुशल श्रमिक, जिनमें एनएचएस के नर्स और डॉक्टर शामिल हैं, या जो 125,140 पाउंड से अधिक कमाते हैं, वे क्रमशः पांच या तीन साल के बाद योग्य हो सकते हैं।

पारिवारिक वीजा पर रहने वाले (जैसे कि ब्रिटिश नागरिक से विवाहित) या एकीकरण के प्रयास करने वाले माने जाने वाले लोग, जैसे कि समुदाय में स्वयंसेवा करना, पांच से सात साल के बाद योग्य हो सकते हैं। जिन्होंने लाभ का दावा किया है, उन्हें 20 साल तक इंतजार करना होगा, जबकि जिन्होंने अवैध रूप से देश में प्रवेश किया है या अपने वीजा की अवधि पार कर ली है, उन्हें बसने के लिए 30 साल तक इंतजार करना पड़ सकता है। कम-कुशल श्रमिकों के लिए, आवश्यक अवधि 15 साल से शुरू होगी। शरणार्थियों के लिए यह 20 साल होगी, जिसमें कोई कमी नहीं की जाएगी जब तक कि व्यक्ति काम या अध्ययन न करे। ऐसे मामलों में, उनकी स्थिति समीक्षा के अधीन एक संरक्षण कार्य और अध्ययन वीजा में परिवर्तित हो जाएगी।

समझौते की उम्मीद जगी: 21 घंटे की बातचीत बेनतीजा, लेकिन जेडी वेंस की पहल से अमेरिका-ईरान के बीच बढ़ा भरोसा

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका और ईरान के बीच हाल ही में हुई शांति वार्ता भले ही किसी ठोस समझौते तक नहीं पहुंच पाई, लेकिन इसने दोनों देशों के बीच रिश्तों में कुछ नरमी जरूर पैदा की है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, जेडी वेंस की अगुवाई में हुई करीब 21 घंटे लंबी बातचीत ने ईरान की नई नेतृत्व टीम के साथ 'गुडविल' यानी भरोसे का माहौल बनाने में मदद की। द वॉशिंगटन पोस्ट की रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिकी अधिकारियों का मानना है कि इस बातचीत से ईरान के साथ संवाद का रास्ता थोड़ा आसान हुआ है और आने वाले समय में ईरान अमेरिकी शर्तों को मानने पर विचार कर सकता है। हालांकि, अभी भी सबसे बड़ा विवाद ईरान के परमाणु कार्यक्रम को लेकर ही बना हुआ है।

अविश्वास खत्म होने में लगा वक्त

रिपोर्ट में बताया गया कि बातचीत के दौरान शुरुआत में दोनों पक्षों के बीच अविश्वास था, लेकिन धीरे-धीरे माहौल बेहतर होता गया और दोनों पक्षों के प्रतिनिधियों के बीच तालमेल भी बढ़ा। खुद अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी कहा कि बातचीत काफी गहन रही और अंत में माहौल काफी दोस्ताना हो गया था। हालांकि, उन्होंने यह भी साफ किया कि ईरान अपने परमाणु कार्यक्रम को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है, जो सबसे बड़ी रुकावट है।

अमेरिका ने क्या रखी मांग?

अमेरिका की मांग है कि ईरान पूरी तरह से अपनी परमाणु संवर्धन क्षमता खत्म करे, ताकि वह कभी भी परमाणु हथियार न बना सके। वहीं ईरान का कहना है कि उसका परमाणु कार्यक्रम सिर्फ शांतिपूर्ण और नागरिक उपयोग के लिए है, और वह इसे पूरी तरह बंद नहीं करेगा। रिपोर्ट के अनुसार, वार्ता के दौरान अमेरिका को यह भी समझ आया कि ईरान खुद को जितना मजबूत मान रहा है, असल स्थिति उतनी मजबूत नहीं हो सकती। यानी अमेरिका को अब ईरान की कमजोरियों का थोड़ा बेहतर अंदाजा लग गया है और आगे की रणनीति उसी आधार पर बनाई जा सकती है।

ट्रंप ने होर्मुज के नाकाबंदी की घोषणा की

इसी बीच, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की तरफ से होर्मुज जलडमरूमध्य में नाकाबंदी की घोषणा भी ईरान पर दबाव बढ़ाने की रणनीति का हिस्सा मानी जा रही है। माना जा रहा है कि इससे ईरान पर समझौता करने का दबाव और बढ़ सकता है।

चक्रवात मैला का कहर : पापुआ न्यू गिनी में 11 की मौत, बोगेनविल में भूस्खलन ने मचाई तबाही

पापुआ न्यू गिनी। पापुआ न्यू गिनी के स्वायत्त बोगेनविल क्षेत्र में उष्णकटिबंधीय चक्रवात मैला ने भारी तबाही मचाई है। इस प्राकृतिक आपदा में अब तक कम से कम 11 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि कई लोग घायल हैं और व्यापक स्तर पर नुकसान की खबरें सामने आ रही हैं।

स्थानीय मीडिया के अनुसार, सेंट्रल बोगेनविल के आसिको गांव में भूस्खलन की भीषण घटना हुई, जिसमें कई घर मलबे में दब गए। इस हादसे में आठ लोगों की मौत हो गई। इसके अलावा, तेज हवाओं के चलते गिरे पेड़ों की चपेट में आने से दो महिलाओं की भी जान चली गई। करीब 12 अन्य लोग घायल हुए हैं, जिनका अस्पताल में इलाज चल रहा है। चक्रवात मैला सोलोमन सागर में कैटेगरी-5 की तीव्रता तक पहुंच गया था, जिसके चलते पापुआ न्यू गिनी और सोलोमन द्वीप समूह के कई हिस्सों में भारी बारिश, बाढ़, तेज हवाएं और समुद्री तूफानी लहरें देखने को मिलीं। इस आपदा ने बड़ी संख्या में घरों और बुनियादी ढांचे को नुकसान पहुंचाया है, वहीं कई इलाकों में भूस्खलन और जलभराव की स्थिति बनी हुई है। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए पापुआ न्यू गिनी के प्रधानमंत्री जेम्स मरापे ने राहत और बचाव कार्यों को तेज करने के निर्देश दिए हैं। सरकार ने प्रभावित इलाकों में खाद्य सामग्री, स्वच्छ पेयजल, दवाइयां और अस्थायी आश्रय पहुंचाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। प्रधानमंत्री ने भरोसा दिलाया है कि हर प्रभावित समुदाय तक मदद पहुंचाई जाएगी। हालांकि, शुरुआती अनुमान में इस चक्रवात के न्यू गिनी के दक्षिण-पूर्वी हिस्से से कैटेगरी-2 या 3 के रूप में टकराने की संभावना जताई गई थी, लेकिन बाद में यह कमजोर होकर ट्रॉपिकल लो में बदल गया। इसके बावजूद, इसने पूरे प्रशांत क्षेत्र में भारी तबाही मचाई। इससे पहले 8 अप्रैल को सोलोमन द्वीप में तीन लोगों के लापता होने की भी खबर सामने आई थी।

अमेरिका की अत्यधिक मांगों के कारण वार्ता बिना किसी समझौते के समाप्त हुई: ईरान

इस्लामाबाद, एजेंसी। ईरान के एक शीर्ष अधिकारी ने रविवार को कहा कि अमेरिका की ओर से "अत्यधिक मांगों" के कारण ईरान और अमेरिका के बीच पाकिस्तान में हुई वार्ता रविवार को किसी समझौते के बिना समाप्त हो गयी। ईरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बकाई ने हालांकि जोर देते हुए कहा कि "कूटनीति कभी समाप्त नहीं होती।"

अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर रहे उपराष्ट्रपति जे डी वेंस ने कहा कि वार्ता शांति समझौते तक नहीं पहुंच सकी। उन्होंने इसका एक प्रमुख कारण यह बताया कि तेहरान अपने परमाणु कार्यक्रम को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हुआ। वेंस ने कहा कि अमेरिकी पक्ष ने अपना "अंतिम और सर्वश्रेष्ठ प्रस्ताव' ईरान को दिया था,

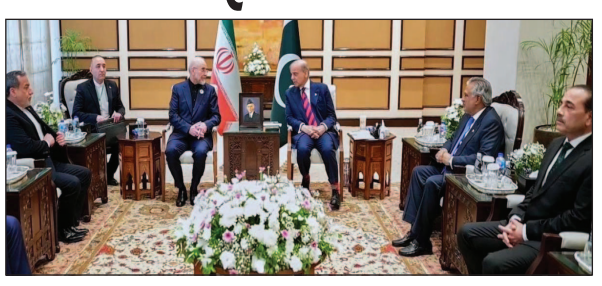

लेकिन उसे स्वीकार नहीं किया गया। वहीं, बकाई ने कहा कि कुछ मुद्दों पर दोनों पक्षों के बीच सहमति बनी, लेकिन "दो-तीन महत्वपूर्ण मामलों" पर मतभेद बने रहे। सरकारी 'प्रेस टीवी' ने बकाई के हवाले से कहा, "अंततः वार्ता किसी समझौते तक नहीं पहुंच सकी।' उन्होंने बताया कि शनिवार सुबह पाकिस्तान की मध्यस्थता में शुरू हुई गहन वार्ता के दौरान दोनों पक्षों के बीच कई संदेश और दस्तावेजों का आदान-प्रदान हुआ। बकाई ने पहले 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा था, "पिछले 24 घंटों में वार्ता के मुख्य विषयों के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हुई, जिनमें होर्मुज जलडमरूमध्य, परमाणु मुद्दा, युद्ध क्षतिपूर्ति, प्रतिबंधों को हटाना और ईरान तथा क्षेत्र के खिलाफ युद्ध का पूर्ण अंत शामिल था।" उन्होंने कहा, "इस कूटनीतिक प्रक्रिया की सफलता विरोधी पक्ष की गंभीरता और सद्भावना पर निर्भर करती है, जिसमें अत्यधिक मांगों और अवैध आग्रहों से परहेज तथा ईरान के वैध अधिकारों और हितों को स्वीकार करना शामिल है।" बकाई ने कहा कि ये वार्ताएं "थोपे गए युद्ध" के 40 दिन बाद और "अविश्वास एवं संदेह" के माहौल में हुईं। सूत्रों ने बकाई के हवाले से कहा, "यह स्वाभाविक है कि हम शुरुआत से ही एक बैठक में समझौते की उम्मीद न करें। किसी ने भी ऐसी उम्मीद नहीं की थी।" उन्होंने कहा, "हम अमेरिका द्वारा वादाखिलाफी और दुर्भावनापूर्ण कार्यों के अनुभवों को भूले नहीं हैं और न ही भूलेंगे।" उन्होंने वार्ता की मेजबानी और इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए पाकिस्तान का धन्यवाद किया। पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री इसहाक डार ने मीडिया से संक्षिप्त बातचीत में कहा कि उनके देश ने पिछले 24 घंटों में "गहन और रचनात्मक" वार्ताओं के कई दौर कराने में मदद की। डार ने उम्मीद जतायी कि दोनों पक्ष स्थायी शांति और क्षेत्रीय स्थिरता के लिए सकारात्मक रुख बनाए रखेंगे। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान आने वाले दिनों में ईरान और अमेरिका के बीच संवाद को आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका निभाता रहेगा। ईरानी प्रतिनिधिमंडल संसद अध्यक्ष मोहम्मद बगेर गालिबफ के नेतृत्व में शुक्रवार रात इस्लामाबाद पहुंचा, जबकि अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल शनिवार सुबह पहुंचा, जिसका नेतृत्व उपराष्ट्रपति जे डी वेंस कर रहे थे।

एमएसपी से संबंधित याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र और अन्य को भेजा नोटिस

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) तय करते समय खेती की सटीक लागत पर राज्यों के प्रस्तावों को महत्व देने की याचिका पर केंद्र और अन्य से जवाब मांगा। सीजेआई सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने केंद्र सरकार और कृषि लागत एवं मूल्य आयोग सहित अन्य पक्षों को नोटिस जारी कर याचिका पर उनकी प्रतिक्रिया मांगी है।

याचिकाकर्ताओं की ओर से पेश हुए अधिवक्ता प्रशांत भूषण ने कहा कि याचिका देश के किसानों से संबंधित एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दे को उठाती है। याचिका में अधिकारियों को यह निर्देश देने की मांग की गई है कि वे खेती की सटीक लागत के आधार पर गणना किए गए एमएसपी के तहत अधिसूचित सभी फसलों की पूर्ण खरीद सुनिश्चित करें।

याचिका में यह निर्देश देने की भी मांग की गई है कि उन सभी किसानों से फसलों की पूर्ण खरीद सुनिश्चित करने के लिए उचित कदम उठाए जाएं, जो अपनी फसलों को एमएसपी पर बेचना चाहते हैं।

सुप्रीम कोर्ट में आज और किन मामलों पर होनी है सुनवाई?

ठाकुर श्री बांके बिहारी जी महाराज मंदिर के प्रबंधन से संबंधित याचिका पर सुनवाई करेगा।

गाजियाबाद में चार साल की बच्ची के साथ बलात्कार और हत्या के मामले में एसआईटी जांच की मांग वाली याचिका पर सुप्रीम कोर्ट सुनवाई करेगा।

देशभर के न्यायाधीशों के कल्याण से संबंधित अखिल भारतीय न्यायाधीश संघ की याचिका पर सुनवाई करेगा।

चंबल रिजर्व में अवैध रेत खनन से संबंधित याचिका पर सुनवाई करेगा।

कश्मीरी अलगाववादी नेता मसरत आलम भट की उस याचिका पर सुनवाई करेगा, जिसकी जांच एनआईए द्वारा एक आतंकी मामले में की जा रही है।

नीतीश कटारा हत्याकांड में दोषी विकास यादव की याचिका पर सुनवाई करेगा।

सामाजिक कार्यकर्ता तीस्ता शीतलवाड़ की याचिका पर सुनवाई करेगा।

बंगाल में आरोप-प्रत्यारोप तेज, भाजपा बोली- टीएमसी कर रही नियमों का उल्लंघन, ईसीआई जांच में जुटा

नई दिल्ली। तृणमूल के एक उम्मीदवार ने धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन करके आचार संहिता के कथित उल्लंघन की शिकायतें मिली। इसके बाद, आयोग के अधिकारी मामले की जांच के लिए हावड़ा जिले के बाली गए। यह जानकारी चुनाव आयोग के अधिकारियों ने सोमवार को दी। भाजपा ने आरोप लगाया है कि बाली से तृणमूल उम्मीदवार कैलाश मिश्रा ने मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए 'नाम-संकीर्तन' का आयोजन किया। उम्मीदवार का नाम 'संकीर्तन' कार्यक्रम में शामिल है।

चुनाव आयोग कर रही जांच

शिकायत मिलने के बाद, चुनाव अधिकारी रविवार शाम को केंद्रीय बलों के साथ मौके पर 'संकीर्तन' कार्यक्रम का निरीक्षण करने गए। उन्होंने पूछताछ की और यह देखना चाहा कि क्या इसके लिए कोई अनुमति प्राप्त थी। तृणमूल ने इस घटना को लेकर भाजपा को निशाना बनाया है। जैसे- जैसे मतदान का दिन नजदीक आ रहा है, बाली में राजनीतिक माहौल गरमाता जा रहा है। भाजपा उम्मीदवार संजय सिंह ने आरोप लगाया कि उनके प्रतिद्वंद्वी उम्मीदवार ने तृणमूल कार्यालय के सामने एक धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया, जो चुनाव आयोग के नियमों की पूरी तरह से अवहेलना दर्शाता है।

मंच पर लगे बैनर पर तृणमूल उम्मीदवार का नाम भी अंकित है। चुनाव आयोग के नियमों के अनुसार, किसी उम्मीदवार को धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन करने की अनुमति नहीं है, जब तक कि पहले से विशेष अनुमति प्राप्त न कर ली जाए। शिकायत मिलने पर आयोग मौके पर गया और आयोजकों से प्रशासनिक अनुमति मांगी। तृणमूल के एक नेता के अनुसार, उनके उम्मीदवार कैलाश ने आयोग के अधिकारियों से बात की और उन्होंने कहा कि यदि अनुमति नहीं मिली तो कार्यक्रम को रोकना पड़ेगा।

धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने की कोशिश

कैलाश ने दावा किया कि भाजपा सिर्फ राजनीतिक लाभ के लिए लोगों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने की कोशिश कर रही है। उन्होंने कहा, ₹वे हमारे कार्यक्रम को रोकने के लिए चुनाव आयोग और प्रशासन का इस्तेमाल कर रहे हैं। आम लोग धार्मिक कार्यक्रम में शामिल हुए हैं। भाजपा इसका विरोध कर रही है।₹ स्थानीय सूत्रों के अनुसार, घटना अभी भी जारी है और इस मामले पर निर्णय की प्रतीक्षा की जा रही है। हालांकि, भाजपा के एक नेता ने दावा किया कि धार्मिक आयोजन करना विधानसभा चुनावों के लिए लागू आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन है। हावड़ा जिले की बली विधानसभा सीट पर दूसरे चरण का मतदान 29 अप्रैल को होगा।

वेब सीरीज 'मटका किंग' को लेकर सुर्खियों में आए विजय वर्मा ने अपनी जिंदगी के उतार-चढ़ाव के बारे में बताया है। उन्होंने बताया है कि उन्होंने अमिताभ बच्चन के साथ सफर किया।

'बिना किसी रिलीज के कान तक पहुंचा, अमिताभ के साथ फ्लाइट में सफर किया', विजय वर्मा ने साझा किए करियर के किस्से

विजय वर्मा अपनी अपकमिंग वेब सीरीज 'मटका किंग' को लेकर सुर्खियों में हैं। एक्टर के मुताबिक उनका करियर हैरान कर देने वाले उतार-चढ़ावों से भरा रहा है। इन उतार-चढ़ावों के बीच लंबे समय तक उन्हें खाली भी बैठना पड़ा। यह सिलसिला तब जाकर खत्म हुआ जब 'गली बॉय' ने उनके लिए सफलता के सारे दरवाजे खोल दिए।

धमाके के बाद शांत हो गए विजय वर्मा

अपकमिंग सीरीज 'मटका किंग' में विजय वर्मा ने 'ब्रिज भट्टी' का किरदार निभाया है, जो संघर्षों से कामयाब होता है। वर्मा के मुताबिक उनका अपना सफर भी किसी सीधी रेखा जैसा बिल्कुल नहीं रहा है।

पीटीआई से बातचीत में फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एफटीआईआई) से ग्रेजुएट और 2000 के दशक में मुंबई आए इस एक्टर ने बताया, 'जिस पहले फेस्टिवल में मैं गया था, वह कान था। वह भी अपनी फिल्म 'मॉनसून शूटआउट' के साथ। इससे बड़ा धमाका मैं और क्या कर सकता था? लेकिन इसके बाद, मैं कई वर्षों तक खाली बैठा रहा। तो, यह भी अपने आप में एक दिलचस्प बात थी।'

अमिताभ बच्चन के साथ प्लेन में सफर किया

विजय ने बताया 2016 की फिल्म 'पिंक' के लिए वर्मा अपने को-स्टार अमिताभ बच्चन के साथ एक प्राइवेट चार्टर प्लेन से दिल्ली गए थे। वहां तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के लिए फिल्म की एक स्पेशल स्क्रीनिंग रखी गई थी।

उन्होंने कहा, 'मुझे याद है कि मैं अपने घर से एक रिक्शे में बैठकर प्राइवेट टर्मिनल तक गया था। फिर मैंने मिस्टर बच्चन के साथ एक प्राइवेट चार्टर प्लेन लिया और हम वहां पहुंचे। स्क्रीनिंग खत्म होने के बाद, मैं उसी जेट से वापस आया, फिर एक रिक्शा लिया और घर लौट आया। यह बहुत ही प्यारा सफर था।' अनुराग कश्यप क्यों करते हैं दूसरों की फिल्मों की तारीफ? 'धुरंधर' और 'सूबेदार' को लेकर कही ये बात

'गली बॉय' के बाद बदली किस्मत

'पिंक' के बाद, वर्मा ने कुछ और फिल्मों में काम किया, जैसे तिग्मांशु धूलिया की 'राग देश', नंदिता दास की 'मंटो' और तेलुगू फिल्म 'मिडिल क्लास अब्बाई'।

उन्होंने आगे कहा, 'इसके बाद जब तक कि मेरी जिंदगी में 'गली बॉय' नहीं आई, तब तक जिंदगी में एक ठहराव आ गया। वह एक बहुत ही अहम पल था। अचानक से मेरे लिए सफलता के सारे दरवाजे खुलने लगे।'

जोया अख्तर की 2019 की म्यूजिकल ड्रामा फिल्म 'गली बॉय', जिसमें रणवीर सिंह और आलिया भट्ट ने मुख्य भूमिका निभाई थी, वर्मा के लिए एक गेम चेंजर साबित हुई। इस फिल्म में उन्होंने मोईन आरिफ का किरदार निभाया था। इस किरदार के लिए आलोचकों ने उनकी खूब तारीफ की।

विजय ने निभाई कई किरदार

'गली बॉय' के बाद से वर्मा ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने एक के बाद एक कई अलग-अलग तरह के किरदार निभाए हैं। मीरा नायर की फिल्म 'अ सूटेबल बॉय' में एक सहायक भूमिका। 'मिर्जापुर' में दोहरी भूमिका। 'डार्लिंग्स' में भट्ट के सामने एक शराबी और हिंसक पति का किरदार। 'जाने जान' में एक तेज-तर्रार और आकर्षक पुलिस अफसर। 'दहाड़' में एक सीरियल किलर और 'गुस्ताख इश्क' में एक रोमांटिक हीरो।

वर्मा ने बताया कि उनकी लगातार यही कोशिश रही है कि वे किसी खास तरह के किरदारों के 'पिंजरे' में कैद होकर न रह जाएं।

'मटका किंग' के बारे में

'मटका किंग' ब्रिज भट्टी की कहानी है। एक तेज दिमाग और मेहनती कपास का व्यापारी, जो 1960 के दशक के बॉम्बे के तेजी से बदलते माहौल में अपनी पहचान और इज्जत बनाने की कोशिश करता है। इस अपकमिंग शो को नागराज मंजुले ने डायरेक्ट किया है। इसे अभय कोरान्ने ने बनाया और लिखा है। यह 17 अप्रैल को रिलीज होने वाली है।

कैंसर से जंग के बीच टेडी मेलनकैंप की बदली जिंदगी, टीवी पर्सनालिटी को हुआ प्यार, इश्क का किया इजहार

'द रियल हाउसवाइव्स ऑफ बेवर्ली हिल्स' फेमस टीवी पर्सनालिटी टेडी मेलनकैंप की जिंदगी में प्यार की बहार आ गई। जबकि इन दिनों वह कैंसर की बीमारी से भी जंग लड़ रही हैं। हाल ही में अपनी डेटिंग लाइफ को लेकर टेडी मेलनकैंप ने खुलकर बात की।

टेडी मेलनकैंप को स्टेज 4 का कैंसर है, इन दिनों उनका इलाज भी चल रहा है। वह जिंदगी की जंग कैंसर से लड़ रही हैं। हाल ही में अपने पॉडकास्ट 'टू टीज इन ए पॉड' में टेडी मेलनकैंप ने कहा, 'मैं उन्हें डेरेक कहकर बुलाती हूं। टेडी मेलनकैंप ने यह भी बताया कि उनके नए पार्टनर हेल्दी लाइफ जीने के लिए मोटिवेट करते हैं, इसमें मदद करते हैं। वह कहती हैं, 'उनके बारे में जो बात मुझे सबसे ज्यादा पसंद है, वह यह है कि वह मुझे हंसाते हैं।'

अब तक 10 डेट्स पर जा चुकी हैं टेडी मेलनकैंप

टेडी मेलनकैंप ने आगे बताया कि वह अपने नए पार्टनर के साथ अब तक 10 डेट्स पर जा चुकी हैं। वह कहती हैं, 'हम अपने रिश्ते के शुरुआती दौर में हैं, इसे धीरे-धीरे आगे बढ़ाएंगे? दरअसल, 'घर में मेरे बच्चे हैं और उनके घर में उनके बच्चे हैं।' पैरेंट्स होने के नाते दोनों को अपनी जिम्मेदारियां भी निभानी पड़ती हैं।

अब तक कैंसर मुक्त नहीं हुईं टेडी मेलनकैंप

कोई प्यार करने वाला साथ हो तो जिंदगी की मुश्किल डगर भी आसानी से पार हो जाती है। यह बात 'द रियल हाउसवाइव्स ऑफ बेवर्ली हिल्स' फेमस टीवी पर्सनालिटी टेडी मेलनकैंप पर सटीक बैठती हैं। इन दिनों वह कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी से जूझ रही है, इलाज के दौरान ही उनकी जिंदगी में प्यार की दस्तक भी हुई है। अपनी डेटिंग लाइफ और नए पार्टनर को लेकर टेडी मेलनकैंप से हाल ही में फैंस को बताया है।

रियलिटी टीवी स्टार टेडी मेलनकैंप का एडविन अरोयोव से तलाक हो चुका था, इनके तीन बच्चे हैं। साल 2022 में टेडी को स्टेज 2 मेलानोमा का पता चला था। अप्रैल 2025 में कैंसर उनके दिमाग तक फैल गया, जिसके बाद यह बढ़कर स्टेज 4 तक पहुंच गया। लगातार इलाज और इम्यूनोथेरेपी के बाद कैंसर ठीक हुआ लेकिन डॉक्टर ने अभी भी उन्हें पूरी तरह से कैंसर-मुक्त नहीं माना जा रहा है।'

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक प्रभात पांडेय द्वारा साई ऑफसेट प्रिंटर्स 40, वासुदेव भवन कैसरबाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 2/74, विक्रांत खंड, गोमती नगर, लखनऊ से प्रकाशित।
शाखा कार्यालय: S-15/109, सेक्टर -15, इंदिरा नगर, लखनऊ। समस्त लेख, रचनाओं एवं विज्ञापन में लेखन और विज्ञापनदाताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए आर्यावर्त क्रांति की कोई जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश ही होगा। RNI No: UPHIN/2014/57034 Website: aryavartkranti.com
*सम्पादक: प्रभात पांडेय सम्पर्क: 9839909595, 8765295384 Email: aryavartkrantidainik@gmail.com